RNI.No.: MPHIN/2013/49539

ISSN2395-7077

त्रैमासिक पत्रिका

अंतसमणि

(ज्ञानपथ का एक पथिक मैं, अंतस का हूँ दिव्यप्रकाश)

भारतीय संस्कृति, साहित्य, समाज, अध्यात्म, नैतिक व मानवीय मूल्यों की सकारात्मक सोच की संवाहक-त्रैमासिक पत्रिका

वर्ष-12 अंक-02 अप्रैल-जून 2024 मूल्य 30 रु. पृष्ठ 4+40=44

ढ़ाई आखर प्रेम के

अंतसमणि की उड़ान
गुणवत्ता है पहचान

संरक्षक
डॉ. प्रतिभा गुर्जर

विशिष्ट परामर्शदाता एवं दिशादर्शक
डॉ. कुमुद निगम

प्रधान संपादक
रेकी मा. सरस्वती कामऋषि

सह संपादक
डी.भारती राव

प्रबंध संपादक
सूर्य प्रकाश जोशी

कला संयोजन
पी अंजली वर्मा

डिजिटल प्रबंधक
नितिन कामऋषि

विशेष संपादक और प्रकाशक
रेकी मा. सरस्वती कामऋषि
ऑफिस: ए/10 सुविधा विहार कॉलोनी,
एयरपोर्ट रोड, भोपाल - 462030 (म.प्र.)
www.antasmani.life
email: antasbpl@gmail.com
Mob: 9329540526

विशेष सहयोग:
कल्पवृक्षम्
वेलफेयर सोसायटी

MPHIN/2013/49539
ISSN 2395-7077

त्रैमासिक पत्रिका

'अंतसमणि'

(ज्ञानपथ का एक पथिक मैं, अंतस का हूं दिव्यप्रकाश)

भारतीय संस्कृति, साहित्य, समाज, अध्यात्म, नैतिक व मानवीय मूल्यों की सकारात्मक सोच की संवाहक-त्रैमासिक पत्रिका

वर्ष-12 अंक-02 | मूल्य 30 रु. पृष्ठ 4+40=44

इस अंक के आकर्षण

1.	सुविचार		2
2.	वरिष्ठ नागरिकों के बीच	सौ. कल्पवृक्षम्	3
3.	संपादकीय	संपादक	5
4.	स्नेह की पाती स्नेहियों के नाम	प्रेरक पत्र शैली	6
5.	जीवन की मुस्कान	सौजन्य हैप्पी थॉट्स	7
6.	आओं सीखें जीवन जीना	अंतस की कलम से	9
7.	आरक्षण महाराज का वरदान	सुमित प्रताप सिंह	11
8.	टीस (कहानी)	स्नेहलता सोनटके	13
9.	विदाई	डॉ. अनिता तिवारी	18
10.	ढ़ाई आख़र प्रेम के	सरस्वती कामऋषि	25
11.	परिवार में ही बच्चों को आदर्श नागरिक बनने के संस्कार मिलते हैं (आलेख)	रमेशचंद्र बादल	28
12.	देह में स्थित पंचकोश (आलेख)	योगगुरू स्वामी रामदेव	32
13.	अंतस की रसोई से (व्यंजन)	सुशीला घाटे	33
14.	आदतों का संस्कार (आलेख)	पी. अंजली वर्मा	34
15.	मत हार (कविता)	बलराम शर्मा	35
16.	शांति ग्रह की सैर (बाल कहानी)	डॉ जया नर्गिस	36
17.	घरेलू नुस्खे		39
18.	हास-परिहास		40

स्वात्वाधिकारी मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक सरस्वती कामऋषि द्वारा खरे प्रिन्टर्स, चौकी तलैया रोड, भोपाल से मुद्रित एवं संकल्पम् 10, सुविधि विहार कॉलोनी, एयरपोर्ट रोड, गांधी नगर, भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित।

Email :antasbpl@gmail.com
Mob.: 9329540526

पत्रिका में प्रकाशित सामग्री का पूर्ण दायित्व लेखक का है। अंतसमणि से संबंधित समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल न्यायालय होगा-सम्पादक

मनिषियों के सुविचार

छल करोगे तो छल मिलेगा आज नहीं तो कल मिलेगा। अगर जिओगे जिंदगी सच्चाई से, तो सुकून हर पल मिलेगा। **–आचार्य अरविंद**

जीवन मिलना भाग्य की बात है..... मृत्यु होना समय की बात है लेकिन मृत्यु के बाद भी लोगों के दिलों में जीवित रहना ये कर्मों की बात हैं। **–डॉ.ए.पी.जे. अब्दुल कलाम**

अगर इंसान शिक्षा की उपेक्षा करता है तो वह लंगड़ाते हुए अपने जीवन के अंत की ओर बढ़ता है। **–प्लेटो**

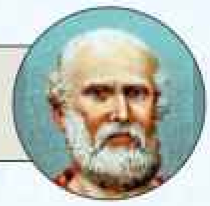

मैं इस दुनिया में सबसे ज्यादा बुद्धिमान व्यक्ति हूं, क्योंकि मुझे ये पता है कि मुझे कुछ नहीं पता। **–सुकरात**

अतीत में ध्यान केंद्रित नहीं करना, ना ही भविष्य के लिए सपना देखना, बल्कि अपने दिमाग को वर्तमान में केंद्रित करना ही समझदारी है। **–महात्मा बुद्ध**

दुनिया में सबसे खुश लोग हैं जो यह जान चुके हैं कि दूसरों से किसी भी प्रकार की उम्मीद रखना व्यर्थ है.......। **–आचार्य चाणक्य**

अपना जीवन एक लक्ष्य पर निर्धारित करो अपने पूरे शरीर को उसे एक लक्ष्य से भर दो और हर दूसरे विचार को अपनी जिंदगी से निकाल दो यही सफलता की कुंजी है। **–स्वामी विवेकानंद**

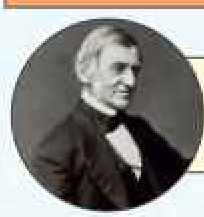

अगर तुम्हें कुछ चाहिए, तो पहले देना सीखो........। **–लाओत्से**

वरिष्ठ नागरिकों के बीच ....
एक सुबह वृद्धजन आश्रम आसरा में।

''सर्वे भवन्तु सुखिनः'' के उत्प्रेरक, बोधवाक्य के साथ सोमवार दिनांक 15/4/2024 को पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार हम सब 'कल्पवृक्षम वेल फेयर सोसायटी' की ओर से ''आसरा वृद्धजन आश्रम'' गोलघर भोपाल में अपनी सेवाओं का कार्यक्रम लेकर पहुंचे। नियत समय पर सभी उपस्थित हुए, हमारे साथ हमारी स्वास्थ्य की टीम भी थी। आश्रम पहुंचकर सभी वरिष्ठ नागरिकों से भेंट हुई उन्हें ससम्मान निर्धारित स्थानों पर बिठाते हुए, उनके बीच 'राम–राम' राधे–राधे के साथ सुखद संवाद हुआ।

'कल्पवृक्षम वेलफेयर सोसायटी' के मुख्य उद्देश्यों में से एक उद्देश्य यह भी है कि सामाजिक व्यवस्था में सबसे मुख्य भूमिका में हमारे वरिष्ठ जनों की जो संख्या है, आखिर उनकी अपनी क्या तकलीफ है, कौन से कारण है, आखिर कौन सी मजबूरी होती है जो इस तरह उन्हें अपनों से दूर होने की नौबत आती है। उन कारणों को जानने के प्रयास के बाद ही हम सेवा की दिशा व दशा तय कर सकेंगे।

इसी उद्देश्य को लेकर हमने अपनी सेवाओं का आरंभ किया। सर्वप्रथम हमारी टीम ने आत्मीयता के साथ सुबह का नाश्ता सभी को प्यार से परोस कर खिलाया। उन सभी की मनपंसद नमकीन के पैकेट उन्हें दिए और नाश्ते के बाद सभी संतुष्ट दिखाई दिए नाश्ते के बाद उन्हे हम सब एक बड़े हॉल में लेकर गए और उन्हें सही तरीके से बिठाया।

'कल्पवृक्षम् वेलफेयर सोसायटी' का संक्षिप्त परिचय दिया, तत्पश्चात उनके विचार लिए, उनमें से कुछ वरिष्ठ जनों ने तीन मुख्य बातें रखी।

- **सामाजिक व्यवस्था का ताना–बाना भारतीयता से दूर हो रहा है।**
- **युवा दिग्भ्रमित हो रहे है शिक्षा में संस्कार और अनुशासन गायब है।**
- **परिवारों का विघटन, विवाह संस्कार का बदलता स्वरूप।**
- उन सभी नागरिको के मतानुसार जो भी संस्थाएँ कार्यरत है, उन्हें समाज की कमजोर कड़ियों पर फोकस करना चाहिए, ना कि अपना नाम करने के लिए दिखावे का काम करना चाहिए। उनके सुझाव अवलोकन किए जायेंगे। हमारी टीम में बड़े ही विवेक पूर्ण ढंग से तय की गई कुछ स्वास्थ्य संबंधी टिप्स उन्हें सिखाए और जीवन के इस अंतिम पड़ाव को सकारात्मकता से सफल बनाने की बात रखी। उन्हें अपने सभी अपनों के प्रति क्षमा का भाव रखते हुए खुद सारी पुरानी घटनाओं से खुद को मुक्त करने की बात रखी। टीम ने उनकी मन की दशा को थोड़े समय के लिए एकाग्रता में स्थिर करने का प्रयास किया।

इसके पश्चात सभी का स्वास्थ्य परीक्षण आरंभ हुआ। और एक एक कर के सभी जनों का पूर्ण स्वास्थ्य परीक्षण के साथ उन्हें कुछ आवश्यक दवाईयां भी प्रदान की गई। उनकी तकलीफों के अनुसार लगभग एक सप्ताह तक के लिये उन्हें दवाईयाँ उपलब्ध करायी गईं ताकि उनकी तकलीफों को विराम मिले। सबसे महत्वपूर्ण संदर्भ यह रहा कि हमारे डॉक्टरों की टीम ने सबका परीक्षण करते हुए, जिस आत्मीयता, धैर्य और शांतचित होकर समस्या सुनकर निदान किया वह सबसे सराहनीय सेवा रही।
इस प्रकार निर्धारित सेवा का हमारा नियोजित कार्यक्रम संपन्न हुआ।

सम्पादकीय

अंतसमणि पत्रिका में अपने सफर पर आगे बढ़ते हुए, निरंतर सामाजिक सरोकारों के प्रति अपनी जागरूकता बनाए रखते हुए इस वर्ष के अपने दूसरे अंक को महान संत जो समाज सुधारक हुए हैं उनकी ही वाणी को मुखर करते हुए एक विस्तारवादी दृष्टिकोण को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। प्यार और नफरत के मिले–जुले भावों को गत कुछ सालों से अनुभव करते आ रहे, जनमानस में उपजे भाव का शीर्षक ही ''ढाई अक्षर प्रेम'' रखा गया है। असल बात तो यह है कि इस सत्य को कोई नकार नहीं सकता। शिक्षा का अर्थ सही मायने में आपका आचरण, व्यवहार और चरित्र ही है जो आपका परिचय देता है। प्रेम को भीतर स्वीकार किए बिना यह संभव नहीं है ज्ञान ही प्रेम का प्रतीक है। ज्ञान और प्रेम जीवन के दो मुख्य आधार हैं।

समस्याएं चाहे कितनी भी विकराल क्यों ना हो उनका समाधान धैर्य, संयम और प्रेम पूर्वक वातावरण में सहज हो जाता है। इसलिए यह कहा गया कि पोथी चाहे जितनी पढ़ ले परंतु ढ़ाई अक्षर प्रेम का अर्थ आप समझ नहीं पाए तो आपकी ऊंची शिक्षा निर्मूल साबित होगी। संत कबीर का यह दर्शन जीवन की गहन गुत्थियों को सुलझा देता है। आज के संदर्भ में यह कबीर चिंतन तात्कालिक परिस्थितियों में अनुकूल प्रतीत हो रहा है। किसी भी समाज की उत्कृष्टता का आकलन शिक्षा, आचरण, व्यवहार, रहन–सहन और बौद्धिक स्वर में आंका जाता है। शिक्षा वही कारगर है, जो आचरण में उतरे जो ज्ञान है वह व्यवहार में झलकना चाहिए।

शिक्षा स्वास्थ्य और रोजगार की अपेक्षित व्यवस्थाएं सरकार की सूझबूझ और ज्ञान पर निर्भर है। हमारी शिक्षा मूल्यों व नैतिक सदाचार को प्राथमिकता देती है तो श्रेष्ठ नागरिकों का निर्माण होगा और जनमानस के इसी बौद्धिक विकास से सामाजिक असमानता दूर होगी। नागरिकों की श्रेष्ठता, देश के प्रति कर्तव्यों का बोध और देश प्रेम ही राष्ट्र विकास की प्रथम सीढ़ी है, यह पहला कदम अति अनिवार्य विषय है, तभी हम यह समझ सकेंगे कि देश अब बौद्धिक विकास के बलबूते आत्मनिर्भर हो रहा है। पत्र–पत्रिकाएं जो चाहे जिस भाषा में हो उनकी उपादेयता समाज में विशेष महत्व की है। साहित्य समाज का दर्पण है जिसमें तत्कालीन परिस्थितियां, परिवेश, सामाजिक जीवन, उतार–चढ़ाव आदि आदि सारी बातों का स्वच्छ प्रतिबिंब दिखाई पड़ता है।

उत्तम सकारात्मक साहित्य के पठन–पाठन की आदत बहुत ही अच्छी बात है। जैसे भोजन शरीर का सुपोषण करता है वैसे ही सुसाहित्य हमारे मन का सुपोषण करती है इसलिए अच्छे विचारों को पढ़ना, समझना आत्मसात करना हमारे बौद्धिक स्तर को बढ़ाता हैं। समाज के प्रति हर नागरिक को जागरुक रहकर अपने अधिकार पर कर्तव्यों का पालन करना चाहिए।

भारतीय संस्कृति, समाज, साहित्य, नैतिक, मानवीय, जीवनीय व आध्यात्मिक मूल्यों के प्रति सकारात्मक सोच व दृष्टिकोण निर्माण करने की दिशा में पत्रिका अपने हर अंक में इन विषयों का ही समावेश करती आयी है। पाठकों के स्नेह और सहयोग से पत्रिका ने 10 वर्ष का अपना सफर तय किया है। पाठकों की प्रतिक्रिया व सुझावों की हम बेसब्री से प्रतीक्षा करते हैं। अपने सजग पाठकों की अपेक्षाओं पर खरा उतर पाना एक संपादक के लिए सबसे बड़ी चुनौती है।

❖❖❖

पत्र शैली में.....

स्नेह की पाती स्नेहियों के नाम

स्नेही पाठकों

स्नेही संबोधन में जो अनुभूति है वह निश्चित रूप से शब्द की असीम शक्ति का प्रतीक है शब्द में शक्तियां निहित है यह हम जानते हैं जब हम संवाद करते हैं तो हमारी अभिव्यक्ति में भाषा चाहे कोई भी हो हम शब्दों का प्रयोग करते हैं। कोई कोई शब्द हमारे कानों में ध्वनि के द्वारा प्रवेश करता है तो दो तरह के प्रभाव प्रतिक्रिया स्वरूप हमारे देह के द्वारा प्रकट होते हैं। जब शब्द मधुर होता है तो हृदय पुलकित आनंदित और शांति का अनुभव करता है किंतु यदि शब्द कटुक या कठोर होता हैं, तो उसके प्रतिकार रूप में हमारी त्योरियां चढ़ जाती हैं, आँखें लाल हो जाती है और हमारा रक्त का दबाव बढ़ जाता है और हम संयम खो बैठते हैं।

स्नेहीं शब्द हमें आत्मीयता से जोड़ता है क्योंकि इस संबोधन में बेशर्त प्यार की अनुभूति निहित है जो ईश्वर हम सबसे करता है, वही प्यार जो एक मां अपने बच्चों से करती है यह प्यार निस्वार्थ प्रेम कहलाता है। बच्चा चाहे जितनी गलतियां करे, शैतानी करे, मां ममता, करुणा से भरे हृदय से उसे क्षमा करती है और उसे एक मौका और देती है परिस्थितियों से सीखने का। क्या? ऐसे प्रेम को झूठलाया जा सकता है? हमें सोचना होगा की प्रेम और नफरत में कौन श्रेष्ठ है। हमें यह जान लेना भी जरूरी है कि हम ईश्वर, अल्लाह, वाहेगुरु, गॉड आदि के बारे में आखिर क्या राय रखते हैं? जरा गौर करें सत्य, ज्ञान, प्रेम, आनंद, शांति। ये है उससे Suprime power का परिचय अच्छे से पढ़कर, सुनकर, देखकर अपनी समझ में बिठा लीजिए।

शब्दों की शक्ति का परिचय मिलेगा इन्हीं पांच शब्दों में। इन शब्दों में अनंत कोटि ब्रह्मांड है और इन्हीं में असीम शक्तियां समायी हैं। हमारा यह मानव शरीर पांच तत्वों से मिलकर बना है और हम श्रद्धा भक्ति से भगवान कहते हैं वह इन्हीं तत्वों का साकार एक शब्द है। अपने तत्वों को संतुलित कर लो। वही ईश्वर की सच्ची आराधना होगी भगवान 'भ' से भूमि 'ग' से गगन 'व' से वायु 'अ' से अग्नि न से नीर ये ही शब्द हमें जीवन की असीमित रहस्यों से अवगत कराते हैं। क्या!!! आप जानना चाहेंगे।

जीवन की मुस्कान

माखी गुड़ में गड़ी रहे.....

कबीरदास

: सौजन्य हैप्पी थॉट्स

बहुत पुरानी बात है जब मुगलों का शासन हुआ करता था, भारत में हां या वही समय था काफी पुराना जब समय बीत जाता है तो हम उस बीते हुए समय को इतिहास मानते हैं उसे भूतकाल भी कहते हैं भूत, वर्तमान, भविष्य में यह तीनों ही काल बहुत महत्वपूर्ण है। महत्वपूर्ण इसलिए कहा जा रहा है कि यदि मान लीजिए आप कोई कहानी अथवा आलेख लिखने बैठे हैं तो लिखते लिखते जब पृष्ठ एक भर जाता है तो आप पृष्ठ दो पर लिखना शुरू कर देते हैं; आगे लिखने के तारतम्य को जोड़ने के लिए आपको पीछे मुड़कर पृष्ठ एक को देखना पड़ता है बिल्कुल सही। यही नियम जीवन, समाज, राष्ट्र, विश्व सहित हर युग में सब पर बराबर लागू होता है। भूत में जाकर हम उन तथ्यों को चुन लेते हैं जिनके बलबूते हम आज के लिए नियम बनाते हैं।

भारत की भूमि ऋषि मुनियों, मनीषियों का कर्मस्थल रहा है जहां उनके तप साधना ने देश को भूत, वर्तमान, भविष्य समझने के लिए मार्गदर्शन दिया है। ऐसे ही एक महान संत हुए हैं जिन्हें हम संत कबीर दास जी के नाम से जानते हैं उन्होंने भारत के बचपन, यौवन, प्रौढ़ व वृद्ध सभी आयु वर्ग के लिए नैतिक मानवीय मूल्यों की शिक्षा और संस्कार की बेशकी मती धरोहर दी है। जब वे अस्तित्व में थे तब भारतीय समाज की दशा बहुत सकारात्मक नहीं थी। दरअसल इतिहास इस बात की गवाही देती है कि उस समय यह जनमानस में घोर निराशा, हताशा और अज्ञानता का घोर अंधकार फैला हुआ था। लोग भटक रहे थे एक मजबूत आधार के लिए बहुत ज्यादा युद्धों की विभिषिका से जन हानि का माहौल था ऐसे में संत कबीर ने अपनी ओजस्वी वाणी से वातावरण को संभालने का प्रयास किया। जगह–जगह लोगों के बीच जाकर बताने की कोशिश की, जीवन में उतार–चढ़ाव हमारे व्यवहार और सोच के कारण आता है पर यदि आप उस एक शक्ति में विश्वास रखो तो अपनी सोच को बदला जा सकता है उन्होंने साखियां लिखी और उन्हें ही सुनाकर लोगों को समझाया। साखी का अर्थ है आंखों देखा सच, अनुभव किया हुआ सच।

वे कहते हैं कि

''माखी गुड़ में गड़ी रहे पंख रहे लिपटाए।
हाथ मलै अरु सिर धुनै, लालच बुरी बलाय।।''

लालच मनुष्य को मृत्यु तक ले जाती है। एक मक्खी के उदाहरण से बड़ी ही सरलता से यह सच सबको समझाया मीठे के लालच में मक्खी गुड़ पर बैठती है और उसका लालच बढ़ जाता है देर तक गुड़ पर बैठे रहने से उसके पंख गुड में चिपक जाते हैं उन्हें छुड़ा नहीं पाती है और उसे प्राण गंवाने पड़ जाते हैं। यह सत्य तो भूत, वर्तमान, भविष्य के लिए ही था। कबीर जी की साखियां अनंत ब्रह्मांड के रहस्यों को हमारे सम्मुख प्रकट करती हैं, हमें आश्चर्य में डालती हैं और सत्य से परिचय भी करती हैं।

संत कबीर दास जी सामाजिक उत्पीड़न के शिकार हुए थे उनके संबंध में यह जनश्रुति है कि वे जन्म के बाद मां के द्वारा एक तालाब के किनारे छोड़ दिए गए थे, वहीं एक जुलाहा दंपति ने उन्हें वहां से उठा लिया था। उनका लालन पोषण कर उनको माता–पिता का प्यार दिया। कबीर को समाज की भेदभाव की नीतियों का शिकार होना पड़ा उन्हें हिंदू मुस्लिम समझते थे तो विद्यालय में प्रवेश नहीं मिला और मुसलमान मदरसों में उन्हें दाखिल नहीं करते थे क्योंकि वे उन्हें हिन्दु समझते थे। इन्हीं रस्साकशी व उलझन में कबीर शिक्षा नहीं पा सके। परंतु उनके आत्मज्ञान की साधना से उनमें उपजे बोलों ने हमें अनमोल ज्ञान दिया। वे बोलते थे और उनके शिष्य लिखते थे। उनके इस ज्ञान के संग्रह को 'बीजक' ग्रंथ के रूप में संरक्षित किया गया है।

संत कबीर दास जी की वाणी ने शिक्षा, संस्कार, मूल्यो की विरासत हमें सौपी है इन्हें संरक्षित सुरक्षित करना हमारा परम कर्तव्य है। कबीर की वाणी से मुखर होगी जीवन की मुस्कान।

❖❖❖

ईश्वर टूटी हुई चीजो का इस्तेमाल बड़ी खूबसूरती से करता है। बादल के टूटने पर पानी बरसतस है। मिट्टी के टूटने पर खेत बनता है। बीज के टूटने पर नए पौधे की संरचना होती है।

इसलिए जब आप खुद को टूटा हुआ महसूस करें तो समझ लीजिए, ईश्वर आपका इस्तेमाल किसी बड़ी उपयोगिता के लिए करना चाहता है।

ईश्वर है हमारा निगेबान है, वह सब देख रहा है।

कुदरत की पाठशाला

❑ : अंतस की कलम से

जीवन एक पद्य भी है एक गद्य भी हम जब भी इसकी व्याख्या करने बैठते हैं तो हम मुख्य चार बिंदुओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं। संदर्भ, प्रसंग, व्याख्या, विशेष अगर हम इन संकेतों के आधार पर उद्धरित अंश को विश्लेषित करते हैं तो हमारे सामने लेखक अथवा कवि विशेष की छवि होती है हम अंशों के आधार पर कवि अथवा लेखक के मनोभाव को विश्लेषित करते हैं तब ही जाकर भाव अभिव्यक्त होता हैं और अंश में प्रतिपादित शिक्षा को हम आत्मसात कर पाते हैं। जीवन अगर गद्य है तब भी और अगर पद्य है तब भी हम यह जान ले कि कवि अथवा लेखक वह निराकार परमात्मा ही है कवि तुलसीदास जी के अनुसार

''बिनु पग चले, सुने बिनु काना''
''बिनु कर करम करे विधि नाना''

इस आधार पर हमें यह जानना है कि ईश्वर ने मानव देह को पांच तत्वों से बना दिया है। यही पांच तत्व धरती, आकाश, वायु जल, अग्नि यह कुदरत है और कहा गया है कि कुदरत ही मनुष्य की प्रथम गुरु है अगर हम इस कुदरत की पाठशाला में भली–भांति प्रशिक्षण ले लेते हैं तो हमारा जीवन बहुत सहज, सरल, सुख समृद्धि पूर्ण हो जाता है ऐसा भी कहा जाता है कि जो मनुष्य कुदरत के कानून को मानते हैं। उन्हें दुनियांवी कानूनो को मानना कोई मुश्किल नहीं लगता और ना ही यह इंसानी कानून उनका कुछ अहित कर सकते हैं यह सच है कुदरत के जिन तत्वों से शरीर बना है उस पाठशाला में प्रशिक्षण प्राप्त करना कोई बुरी बात नहीं है। यह बात इस पर निर्भर करती है कि आप परमात्मा के द्वारा रचित इस जीवन प्रसंग की कैसी व्याख्या करते हैं यह आप पर निर्भर है

कुदरत की पाठशाला में कोई शुल्क अथवा फीस नहीं लगती यहां तो बालक के सर्वांगीण विकास का प्रयास होता है, उसके चरित्र का निर्माण होता है क्योंकि महत्व मानव चित्र का नहीं वरन चरित्र का है यही बात संस्कृति भी समझाती है; इस पाठशाला में मनुष्य के रीढ़ की हड्डी यानि चरित्र को इतना मजबूत बनाया जाता है कि वह सशरीर अपने अस्तित्व को इस संसार में एक पहचान दे सके। दरअसल अंग्रेजी में यह बहुत प्रचलित है–

If you lost health
some thing is lost
It you lost money
Nothing is lost
but
you lost your character
everything is you lost.

जीवन में धन और स्वास्थ्य से बढ़कर है हमारा चरित्र।इसलिए हमें सजगता से चरित्र की ओर ध्यान देना चाहिए। धरती पर पैर जमाकर हमें आसमान की नई ऊंचाइयां छूना चाहिए नदी की धारा के प्रवाह की तरह निरंतर कर्मशील बनकर चुनौतियों के विपरीत जाकर पर्वतों की चट्टान की तरह अडिग, दृढ़ होकर अपना लक्ष्य साधना है। समुद्र की गहराई और गंभीरता धारव कर अपने उद्देश्य को पाना है। अपने जीवन को सफल बनाने के लिए वायु की गति से आगे बढ़ना है। संसार रूपी घने वनों में छिपे हिंसक तत्वों से अपनी सुरक्षा भी करनी है। नदी, पहाड़, समुद्र, आकाश, जंगल, जमीन यह सभी प्रकृति की शक्ति चिन्ह है जो एक चरित्रवान मनुष्य को प्रेरणा देते हैं ।ऐसी शक्तियों के होते हुए भी यदि हम इन रहस्यों को न समझ पाए तो हमारा दुर्भाग्य है। भाग्य ईश्वर नहीं बनाता उसे तो भाग्यवीर मनुष्य स्वयं बनाता है।

निष्कर्ष तो यही जाता रहा हैं यही संदेश दोहरा रहा है कि क्यों ना हम सब मिलकर कुदरत की पाठशाला में आओं सीखे जीवन जीना।

❖❖❖

कविता

अब सुख-दुख की खातिर

लक्ष्मी नारायण पयोधि

अब सुख दुख की खातिर कोई संविधान बन जाए,
दिल के हर बाशिंदे का अपना मकान बन जाये।

कब तक राजा और प्रजा का मिट पाएगा अंतर,
नई नस्ल के लिए खुशनुमा ये जहांन बन जाये।

कितने कड़वे बोल सियासत के अब और हुए हैं,
ऐसा जादू चले की मीठी हर जवान बन जाये।

उसके ख्वाब उड़ानो पर है और घोंसला सूना,
लौट किसी दिन जब घर आये वह बयान बन जाये।

नहीं जरूरी यूं हो जाए कामयाब हर कोशिश,
लेकिन उसने ठान लिया है, वृंदावन बन जाए।

आरक्षण
महाराज का वरदान

: सुमित प्रताप सिंह

'हे मुस्टंडे महाराज आप कौन हैं?'

हा हा हा...। तुम मुझे नहीं जानते। हा हा हा...। भारत देश में रहते हुए भी मुझे नहीं जानते। हा हा हा..।

'महाराज सबसे पहले तो एक बात बताएँ। आप इतना हँस क्यों रहे हैं? मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि या तो आप रावण के वंश से हैं या फिर आप हँसाने वाली गैस नाइट्स आक्साइड के प्रभाव में हैं? वैसे आप ही बताएँ कि आखिर ये माजरा क्या है?'

'हा हा हा....। देखो न तो मैं रावण के खानदान से हूँ और न ही मुझ पर किसी ऐसी गैस–वैस का असर है, जिसका नाम याद करने में ही पसीने छूटें। मैं तो भारतीय संविधान द्वारा दी गई सुविधाओं को पाकर मस्त रहता हूँ और सदैव हँसता रहता हूँ।'

'वैसे आप हैं कौन ?'

'पहले तुम बताओ कि तुम कौन हो?'

'जी मैं सवर्ण समाज हूँ। अब आप अपना परिचय देने की कृपा करें।'

'हा हा हा। मैं तुम्हारी नैया डुबाने वाला आरक्षण हूँ।'

'महाराज आपका जन्म कब, क्यों और कैसे हुआ? कृपया इस विषय में ज्ञान दीजए।'

'वैसे तो ज्ञान और मेरा नाता कोसों दूर का है, फिर भी मैं अपनी जन्म लेने की कहानी तुम्हें बताता हूँ।'

'आपकी इस दयालुता के लिए आभार।'

'तो सुनो मैं बाबा अंबेडकर की जिद व महात्मा गांधी के आशीर्वाद से उत्पन्न जीव हूं। पूना समझौते का सहारा लेकर दिनांक 24 सितंबर, 1932 ईस्वी को मेरा जन्म हुआ।'

'किन्तु महाराज, जहाँ तक मैंने सुना है, आपका जन्म निश्चित समय के लिए ही हुआ था।'

'सही सुना है। मेरा जन्म दस वर्ष के लिए ही हुआ था। दस वर्ष की अवधि पूर्ण करते ही मुझे इच्छामृत्यु का वरण कर लेना था।'

'फिर आपने ऐसा किया क्यों नहीं?'

'मैं क्या करता। मुझे जीने को प्रोत्साहित किया गया।'

'किसने आपको जीने को प्रोत्साहित किया?'

'उन लोगों ने, जो किसी–न– किसी प्रकार सत्ता से

चिपके रहना चाहते थे। उन्होंने हर बार दस वर्ष मुझे जीवनदान दिया। अब मुझे विश्वास हो गया कि मेरी मृत्यु कभी भी नहीं होगी। मैं अजर–अमर हूँ। हा हा हा।'

'शायद आप ठीक कह रहे हैं। जैसे–जैसे आपको अभयदान मिलता जा रहा है, मेरी मुश्किलें बढ़ती जा रही हैं।'

तुमने सदियों तक मजे भी तो मारे हैं और आरक्षित वर्ग का शोषण किया है।'

'यदि हमने आरक्षित वर्ग का शोषण किया होता तो वर्तमान में उनकी जनसंख्या इतनी अधिक कैसे होती?'

'हाँ, यह तो सोचने वाली बात है।'

'चलिए इस बात से संतोष हुआ कि आप सोचते भी हैं।'

'क्या मैंने सोचकर कोई पाप किया? चलो मैं फिर से अपनी न सोचने वाली पूर्व स्थिति में आ जाता हूँ।'

'नहीं–नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है। मुझे आपके सोचने पर कोई आपत्ति नहीं है। आप सोचिए और मैं तो कहता हूँ कि जी भरके सोचिए। सोचिए कि क्या वास्तव में जिन्हें आरक्षण का लाभ मिलना चाहिए था, उन्हें यह मिल पाया? आप सोचिए कि जो आरक्षण लेकर सक्षम हो गए क्या उन्होंने आपका दुरुपयोग नहीं किया और वंचितों का अधिकार नहीं मारा? आप यह भी सोचिए कि आरक्षण से एक ऐसा वर्ग पनपा है, जो एक साजिश के तहत इसका लाभ उन लोगों को लेने से रोक रहा है, जिन्हें इसकी सख्त जरूरत है?'

'मुझे यह सब मालूम है।'

'फिर भी आप कुछ नहीं करते।

'कहीं इसमें आपकी मिलीभगत तो नहीं है?'

'अब तुमसे क्या छुपाना। मैं स्वयं इस अन्याय से व्यथित हूँ और इतना अधिक व्यथित हैं कि अकाल मृत्यु चाहता हूँ, किन्तु मृत्यु शायद मेरे भाग्य में नहीं है।'

'अरे आप तो हँसने के साथ–साथ रोते भी हैं।'

'हाँ लोगों से अपना दुःख छिपाने के लिए मैं सदैव हँसता रहता हूँ। तुम सोचते होंगे कि आरक्षण–व्यवस्था से मैं बहुत प्रसन्न हूँ, जबकि ऐसा बिल्कुल नहीं है। मुझे इसलिए उत्पन्न किया गया था ताकि समाज में सभी समान बन सकें, किंतु जबसे मेरा जन्म हुआ है, तब से समाज में द्वेषभाव में निरंतर वृद्धि होती जा रही है। खैर, मैं तुमसे अत्यंत प्रभावित हुआ। तुम कोई एक वर माँगो मैं उसे पूर्ण करने का हर संभव प्रयास करूंगा। हाँ मेरी मृत्यु मत माँगना, क्योंकि यह मेरे वश में नहीं है।'

'आपने भारत के हर वर्ग को अपनी शरण में ले लिया है। आपसे निवेदन है कि मुझे भी अपनी छत्रछाया में ले लें।'

'तथास्तु! आज से एस.बी.सी. के रूप में मैंने तुम्हें आरक्षण अर्थात स्वयं में सम्मिलित किया।'

'एस.बी.सी. से अभिप्राय?'

'एस.बी.सी. अर्थात स्पेशल बैकवर्ड क्लास बोले तो विशेष पिछड़ा वर्ग। आज से संपूर्ण भारतवासी मेरी शरण में आ गए। अब किसी में कोई भेद नहीं रहेगा और न ही आपसी संघर्ष होगा। अर्थात् न रहेगा बाँस, न बजेगी बांसुरी। हा हा हा....।'

'धन्यवाद, आरक्षण महाराज। आप वास्तव में महान् हैं।'

❖❖❖

टीस

: स्नेहलता सोनटक्के

''आज आप देर से आये कोई खास बात है जी?'' नहीं जया, ऐसी कोई बात नहीं है रोहण ने कहा और चुपचाप आराम कुर्सी में बैठ गये। जया इतना पूछकर रसोई में खाना बनाने लग गई। रोहण ऑफिस से थके–हारे आया। उनके चेहरे पर चिंता झलक रही थी। कोई बात तो जरूर थी जो वो जया को नहीं बताना चाह रहे थे। जया भी सोच रही थी कि जरूर कोई बात है जो रोहण बताना नहीं चाहते।

जया के पीछे रोहण आकर खड़े हो गये और बड़े ही प्यार से जया के कंधे पर हाथ धरकर कहा कि ''जया तुमसे एक बात पूछना चाहता हूँ, बहुत दिनों से मेरे मन में एक सवाल उठ रहा है कि तुमको यह बात बताऊँ कि नहीं।''

''जया आज जो पोस्टमेन पत्र लाया था उसके बारे में मैं तुमसे बात करना चाहता था। हां जी, वह पत्र क्या था? मैंने पढ़ा ही नहीं था, यह सोचकर कि वह कोई ऑफिस का पत्र होगा।''

''नहीं जया, वह ऑफिस का पत्र नहीं था वह मेरा पत्र था, मैं बताना चाहता हूँ कि वह शादी का कार्ड था।''

''किसकी शादी का कार्ड था।'' जया ने पूछा

''वह कार्ड रविन्द्र का था।''

''रविन्द्र कौन हैं, आपका कोई रिश्तेदार है?''

''ऐसा ही समझा जाये।''

''मैं समझी नहीं जी।''

''मेरा एक दोस्त है, शिमला में रहता है। उसकी शादी हुई थी तो मैं उसकी शादी में गया था। हम दोनों साथ–साथ पढ़े थे मगर नौकरी अलग–अलग शहर में लगने से हम अलग हो गये थे। वो शिमला में रहता था, और हम यहां गोवा में। मेरा दोस्त जिसका नाम शेखर था। उसकी शादी हुई और दो साल तक कोई बच्चा नहीं हुआ था इसलिये शेखर ने अपनी पत्नी सपना का चेकअप डाक्टर से करवाया था, डाक्टर ने शेखर को बताया कि सपना कभी मां नहीं बन सकती। शेखर ने मुझे बताया और कहा कि मैं सपना को बहुत प्यार करता हूं मैं उसको खुश देखना चाहता हूँ।''

मैंने कहा– ''क्या सपना जानती है कि वह मां नहीं बन सकती।''

''नहीं, मैंने उसे कभी यह बात नहीं, बताई नहीं तो उसका दिल टूट जायेगा।''

''अब क्या सोचा है उसके बारे मे'' शेखर खामोश रहा कुछ भी नहीं बोला। उसी समय की बात है जब मैं और शेखर साथ–साथ पढ़ते थे। मैं शायना नाम की लड़की से प्यार करता था और उससे शादी करना चाहता था। हमने साथ–साथ जीने मरने की कसमें खाई थी, हमारा प्यार सच्चा था। हमारे प्यार में कोई खोट नहीं थी। एक दिन हम कॉलेज की तरफ से पिकनिक मनाने खंडाला गये थे। हम दोनों साथ–साथ ही रहते थे क्योंकि हमें शादी तो करना ही थी इसलिये हमारे व्यवहार अति निकट के हो गये थे। खंडाला वहां पर हम खूब घूमे फिरे और मौज–मस्ती करी। जब हम वापस आ रहे थे तो हमारी गाड़ी बीच जंगल में खराब हो गई। हम दोनों हमारी कार में थे। हमारे सिवा और कोई नहीं था। अचानक खूब तेज बारिश हुई, हमारे

साथ के लोग अपनी कार से आगे निकल चुके थे। उनमें किसी को भी पता नहीं था कि हमारी गाड़ी खराब हो गई है। हम जंगल में अकेले थे और फिर घनी बारिश हम दोनों इतने करीब आये कि अपना होश खो बैठे और शायना ने अपने आपको मुझे समर्पित कर दिया। जब बारिश थमी, आसमान साफ हुआ तब तक सुबह हो चुकी थी। शायना गहरी नींद में सो रही थी, मैंने उसे उठाया नहीं। गाड़ी में क्या खराबी आई है, यह देखने कार से बाहर आया तभी वहां से एक और गाड़ी गुजर रही थी। मैंने इशारे से उसे रोका और कहा कि हमारी गाड़ी खराब हो गई है. आप हमारी मदद करें, वह व्यक्ति सदग्रहस्थ था। करीब साठ वर्ष का व्यक्ति था। वह पूछने लगा ''क्या हुआ आपकी पत्नी की तबियत खराब है क्या वह वहां सो रही है?''

''हां अंकल वो सो रही हैं, रात भर हम यहां बारिश में कार में बंद थे'' ''अच्छा'' अंकल ने कहा और अपनी कार से पीछे हमारी कार को बांधकर हमें शहर तक लाये तब तक शायना जाग चुकी थी। उसकी आँखे फूली थी। लग रहा था मानो उसकी तबियत खराब हो अंकल ने हमें कार के साथ गैराज में लाकर छोड़ा। मैंने अंकल को धन्यवाद दिया और अंकल अपना परिचय पत्र देकर कहने लगे कि ''कभी आप दोनों हमारे घर आओ, हमें अच्छा लगेगा।''

हमारी कार गैराज में सुधर रही थी। शायना कार से बाहर आ चुकी थी। वो मुझे देख रही थी, उसकी आँखों में कितने सपने मैं देख रहा था और मैं अपने भविष्य के बारे में सोच रहा था। रात वाली घटना मेरे आँखों के सामने घूम गई, शायना पर मुझे दया आई, सोचा लडकियां कितनी भोली होती हैं, प्रेम मे अपना सर्वस्व लूटा देती हैं। वह मेरे कॉलेज का फायनल ईयर था। हमारी परीक्षा नजदीक थी। हम दोनों कार सुधरने के बाद अपने-अपने घर गये। मुझे बार-बार रात वाली घटना याद आ रही थी।

दूसरे दिन शायना मिली परन्तु उसके व्यवहार में वो चंचलता, वो शोखी नहीं लग रही थी जैसे समंदर की लहरें अपना शोर बंद कर शांत हो गई हैं। कितनी शांति थी उसके चेहरे पर उसने मुझसे कोई बात नहीं कही। बस, इतना कहा- ''रोहण परीक्षा नजदीक आ रही है, हमें अपना ध्यान पढ़ाई में लगाना चाहिये हमें पास होना है।'' इतना कहकर वो चली गई। हम दोनों कभी-कभी मिलते थे, पढ़ाई में इतना व्यस्त हो गये थे कि अब हमारा मिलना-जुलना नाममात्र का था। परीक्षायें खत्म हो गई थी। मैं शायना से मिलने गया मगर वह मुझे मिली नहीं उसकी मां ने मुझे बताया कि शायना बड़ी बहन के घर गई है छुटिटयां मनाने अगले महीने आ जायेगी। मुझे आश्चर्य हुआ मुझसे मिले बिना मुझसे कोई बात किये बिना शायना कैसे चली गई मैं उसके आने का इंतजार करने लगा। एक महीना काटना मेरे लिये बड़ा भारी लग रहा था। मेरे लिये एक-एक दिन भारी लग रहा था। इतने अंतराल में मैंने अपनी नौकरी के आवेदन इधर-उधर शहरों में भेजे थे। आश्चर्य कि बात यह थी कि मुझे बहुत जल्दी ही नौकरी का कॉललेटर भी आ गया था, यहां मैं बताना भूल गया था कि हमारा रिजल्ट भी बहुत जल्दी निकल गया था। मैं और शायना दोनों फर्स्ट आये थे,

शायना होती तो मैं उसके साथ अपनी खुशी बांटता मगर शायना नहीं थी। मुझे नौकरी का कॉललेटर आया तो मैं यहां गोवा आया। यहां मुझे जिस कंपनी में नौकरी लगने वाली थी उसके मालिक मेरे पापा के मित्र थे इस वजह से मुझे अच्छा पद मिला। मुझे उसी समय नौकरी ज्वाइन करना था, मैं यह बात शायना को बताना चाहता था मगर मुझे शायना मिली नहीं। मैं उसके घर भी गया मगर मुझे उसके घर में कोई जानता नहीं था तो मैं अपने मन की बात किसको बताता मैं फिर वापस गोवा आया। इस तरह छः महिने निकल गये एक दिन मैं अपने मातृ शहर गया शायना के घर गया सामने ही शायना दिखी मुझे देखते ही साथ वह मुझसे लिपट गई और कहने लगी रोहण तुम मुझे छोड़कर कहा चले गये थे।''

''शायना मैं तुम्हारे घर कितनी बार आया मगर तुम मुझे बिना बताये चली गई थी अपनी बहन के घर छुट्टियाँ मनाने तुम्हारे घर वाले मुझे नहीं जानते थे मैं उनकों क्या बताता।

''क्यों क्या हुआ रोहण ने पूछा।''

''रोहण मैं मां बनने वाली हूँ।''

''क्या?''

''हाँ रोहण मैं तुम्हारे बच्चे की मां बनने वाली हूँ तीन महिने के बाद मेरी डिलेवरी होने वाली है।''

''तुम घबराओ मत शायना मैं हूँ ना अब मैं आ गया हूँ हम दोनों ब्याह करते हैं मैं तुम्हारे माता–पिता से मिलना चाहता हूँ और कहता हूँ कि मैं तुमसे ब्याह करना चाहता हूँ।''

इस तरह हमारी शादी हुई हमारी शादी कुछ अनोखी हुई, शायना के पेट में बच्चा लेकर हमने शादी की परन्तु मैं उसे अपने साथ लेकर नहीं आ सका वो अपने मायके में ही रही क्योंकि उसकी देखभाल उसके घर में ही हो रही थी शायना बहुत खुश थी कि उसकी शादी भी हुई और वह मां भी बनने वाली है। मैं बीच–बीच में उसको आकर देखता उसके साथ उसके मायके में रहता फिर डिलेवरी का वक्त आया मैं शायना के साथ था। वह बहुत खुश थी इतना कि उसकी खुशी का कोई ठिकाना न था। मैं हर पल उसके साथ था उसके पेट में दर्द होने लगा तो हमने उसे अस्पताल में भर्ती करवाया डाक्टर ने चेकअप किया उसके डिलेवरी का वक्त दिया कि कल सुबह तक का इन्तेजार करते हुये रात भर उसके पास बैठे रहे सुबह ठीक छह बजे उसको बहुत दर्द होने लगा और सारे डाक्टर उसके पास थे वह दर्द से छटपटा रही थी। डाक्टर ने कहा कि मरीज की हालत खराब होती जा रही है। डाक्टरों की देखरेख में शायना ने सुन्दर से बच्चे को जन्म दिया लड़का हुआ था। शायना का लड़का नर्स ने मुझे लाकर दिखाया मैंने नर्स से पूछा क्या मैं शायना को देख सकता हैं तब नर्स ने कहा कि आधे घंटे के बाद आकर मिल सकते हैं। मैं बाहर ही खड़ा था आधे घंटे के बाद जब मैं अन्दर गया वह आंख बंद किये पड़ी थी मैं उसके पास गया अपना हाथ उसके माथे पर रखा उसने अपनी आखें खोली उसकी आँखों की कोरों से दो बूंदे गिरी मैंने उसके आँसू पोछे उसके होंठ हिले वह कुछ बोलना चाहती थी मैंने कहा शायना हमें बेटा हुआ है उसने आँखों के इशारे से हाँ कहकर आँखें बंद करी उसके होंठ हिले वह कुछ बोलना चाहती थी पर बोल नहीं पा रही थी मैंने पूछा क्या बात है शायना? तो बहुत धीरे से वह कह रही थी रोहण मेरे बेटे का ध्यान रखना मेरा प्यार देना इतना कहकर उसने अपनी आँखें हमेशा के लिये बंद कर ली। मैं उसकों टटोल रहा था उसे आवाज दे रहा था। चिल्ला रहा था। मेरे चिल्लाने से सारे डाक्टर मेरे आजू बाजू आ खड़े हुए शायना हमें छोड़कर जा चुकी थी डाक्टरों ने उसे मृत घोषित किया था।

मैं यह हादसा सह नहीं पाया कितने ही दिन बिस्तर में पड़ा रहा मेरा दोस्त शेखर दिलासा देता रहा मेरा हौसला बढ़ाता रहा मैं समय के साथ–साथ अपने आप को ढांढस बंधाता रहा मेरा बेटा अपने नाना–नानी के पास रहने लगा मगर वे बहुत बूढ़े थे। उनसे वह बच्चा संभालना मुश्किल हो रहा था। ईंधर शेखर ने शादी कर ली तो पत्नि को कभी बच्चा नहीं होगा यह बताया था शेखर ने कहा कि डाक्टर ने कहा है कि उसे कभी बच्चा नहीं होगा। तब तक मेरा बेटा दो साल का हो चुका था मैंने उसे कहा कि ''तू मेरा बेटा गोद ले ले।'' शेखर ने मेरा बेटा गोद ले लिया मुझे आराम हुआ कि मेरे बेटे को मां बाप मिल गये थे। सपना ने देखा मेरे बेटे को और अपने कलेजे से लगाया मेरे दिल को तसल्ली हुई शेखर मेरे बेटे को जी जान से प्यार करने लगा, उसकी वीरान जिन्दगी में बहार आ गई थी मेरे बेटे के अब दो पापा थे। सपना का स्वप्न जैसे साकार हो गया था उसने मेरे बेटे का नाम रविन्द्र रखा। मैं अपने बेटे से मिलने कभी–कभी जाता था उसके साथ खेलता वो मुझे अंकल कहता और शेखर को पापा कहता था। जब वह मुझे अंकल कहता तो मेरे दिल में टीस सी उठती थी मेरा कैसा भाग्य है मैं अपने बेटे को बेटा नहीं कह सकता। आज रविन्द्र डाक्टर बन गया सपना का सपना पूरा हो गया रविन्द्र के शादी का कार्ड हाथ में लेकर अपनी पत्नी जया को अपनी कहानी सुना रहा था।

जया ने सुना तो उसे चक्कर सा आ गया और धम से सोफे पर बैठ गई और बुदबुदाने लगी ''हे भगवान ये मैं क्या सुन रही हूँ।''

''जया, जया तुम्हें क्या हो गया जया मैंने तुम्हें अपनी दु:ख भरी कहानी तुम्हें बताई मैं नहीं चाहा था तुमको कभी मेरी दु:ख भरी तकलीफ मालूम हो मगर वक्त आ गया कि तुमको बताना अति आवश्यक हो गया है। रविन्द्र की शादी में मुझे तो जाना ही पड़ेगा ना। मैं चाहता हूँ कि तुम भी चलो मेरे साथ मेरी हिम्मत बढ़ाने में उन सभी परिस्थितियों का सामना कर सकूं जया तुम सुन रही हो न मैं क्या कह रहा हूँ।''

जया ने रोहण को देखा और देखती ही रही रोहण कह रहे थे जया बोलो कुछ तो बोलो मैं तुम्हारे मुँह से मेरे लिये कुछ न कुछ सुनना चाहता हूँ।

जया ने कहना शुरू किया रोहण आपके साथ इतना कुछ हुआ और आपने कभी अपना दु:ख अपनी तकलीफ मुझे नहीं बताई। जया मैं नहीं चाहता था कि तुम्हारी खुशियों में कोई खलल पड़े तुम मेरे बारे में कुछ गलत सोचो या तुम्हारी नजरों में मैं गिर जाऊँ। इसलिये मैंने आज तक तुम्हें कुछ नहीं बताया।''

''रोहण आपने अपने बेटे को अपने से दूर कैसे रखा?''

''क्या करता जया जब रविन्द्र पैदा हुआ था तब उसकी मां मर गई थी उसे मां की आवश्यकता थी तब उसकी नानी ने उसे पाला था उसे मां का प्यार दिया था नानी इतनी बूढ़ी थी कि उनसे रविन्द्र को संभालना मुश्किल हो रहा था और फिर उसे मां का प्यार चाहिये था मैं उसके लिये मां कहां से लाता इसलिये मैंने शेखर और उसकी पत्नी सपना को दे दिया मैं इतने छोटे बच्चे को कैसे पालता। सपना ने उसे अपने कलेजे से लगाया मां का प्यार दिया तब मैं निश्चिंत हो गया फिर सपना ने कहा कि वो अब कभी मुझे रविन्द्र को नहीं देगी'' यही उसने मुझे कसम दिलाई थी। मैं क्या करता मुझे परिस्थितियों से समझौता करना ही था ना। जब जब मुझे रविन्द्र की याद आती मैं टूर का बहाना कर शिमला अपने बेटे से मिलने जाता वह मुझे अपना अंकल समझ बहुत प्यार करता मैं अपने बेटे का बाप होकर भी मैं उसे अपना बेटा नहीं कह सका। आज जब उसके शादी का कार्ड आया तो तुमसे मैं इस बात

को छुपा नहीं सका, चलोगी न शादी में।''

''हां जी मैं अपने बेटे को अवश्य देखने चलूंगी आपका बेटा है तो मेरा भी बेटा है, आप कितने महान है जी आपने अपनी खुशी को दूसरों की झोली में डाला और दूसरों की खुशी का ध्यान रखा।''

''जया मैं सोच भी नहीं सकता था कि तुम मेरे बारे में इतना ऊँचा सोचोगी तुम महान हो जया मुझे गर्व है तुम्हारी सोच पर कि तुमने मेरे बारे में अच्छा सोचा मैं डर रहा था कि कहीं तुम मुझसे नाराज तो नहीं हो जाओगी यही सोचकर मैं सारी जिन्दगी खामोश रहा। आपने इतना दर्द सहा है आपकी पत्नी मरी, आपका बेटा आपसे दूर रहा, आपने मझसे शादी की, कभी मुझे कोई दु:ख तकलीफ नहीं दी।''

''जया तुम कितनी अच्छी हो रविन्द्र तुमसे मिलेगा तो कितना खुश होगा वो हमेशा कहता था' अंकल आप अकेले आते हो आंटी को क्यों नहीं लाते'' मैं क्या जवाब देता क्या कहता परन्तु अब तो मैं तुम्हे भी लेकर जाऊँगा चलो जया चलने की तैयारी करो हमें जल्दी पहुँचना है मेरा बेटा अपने अंकल का इन्तजार कर रहा होगा।''

''ठीक है जी, मैं माया को भी तैयार करती हूँ उसे भी तो लेकर जाना होगा ना'' जया ने अपनी बेटी माया को भी तैयार किया माया बार–बार पूछ रही थी कि पापा मम्मी किसकी शादी में जाना है मगर जया ने कुछ भी नहीं बताया माया को ''

❖❖❖

विदाई

❑ :डॉ. अनिता तिवारी

जीवन के बीस बसंत मीतू मल्होत्रा ने बिना अपनी माँ के लाड़–प्यार के देखे थे। हालांकि उसके पिता नरेन्द मल्होत्रा उसका बहुत ध्यान रखते थे। परन्तु माँ की कमी को पिता कभी पूर्ण नहीं कर सकता है। मीतू अल्हड़ और अत्यधिक चंचल स्वभाव की लड़की थी। गंभीरता तो उसके आस–पास तनिक भी नहीं भटकती थी। इस कमरे से उस कमरे में दौड़ भाग करना, मौज मस्ती के साथ जीना, उसका स्वभाव बन गया था।

मीतू के पापा उसे बहुत स्नेह करते थे, परन्तु उसकी इतनी अल्हड़ता देखकर कभी–कभी वह चिन्तित भी हो उठते थे। नरेन्द्र की चिन्ता वाजिब थी, वह सोचते थे मीतू भले ही कितने प्यार दुलार में क्यों ना पली बढ़ी हो, परन्तु है तो वह एक लड़की ही, दूसरे के घर जाएगी तो लोग उसे ही भला–बुरा कहेंगे। फिर उसकी तो माँ भी नहीं है। लोग उसी पर छींटाकशी करेंगे कि इसे कोई सहूर सलीका नहीं सिखाया।

एक दिन की बात है, नरेन्द्र और मीतू दोनों ही नाश्ता कर रहे थे। मीतू मस्ती के मूड़ में थी। बात–पर–बात किए जा रही थी। नरेन्द्र चुप था। जब मीतू की सारी बातें खत्म हो चुकीं तो नरेन्द्र ने कहा–

''देखो बेटी ! अब तुम्हें छोटे बच्चों जैसी मस्ती करना बिल्कुल शोभा नहीं देता।''

''क्यों पापा?'' मीतू ने चहककर कहा।

इसलिए, कि अब तुम बड़ी हो चुकी हो, तुम्हें घर का थोड़ा बहुत काम–काज भी सीखना होगा, अपने आप में

थोड़ा बड़प्पन रखना होगा। जितनी जरूरत है उतना ही बोलना होगा।

नहीं पापा, मीतू बोली– यदि बड़े होने का मतलब चुप रहना या कम बोलना है तो मैं कभी बड़ी नहीं बनना चाहती जो खुशी छोटा बनकर रहने में है, वो बड़ा बनने में कहाँ?

नरेन्द्र ने कहा, बेटी, तू मेरे लिए तो कल की छोटी सी गुड़िया ही है, मैं तुझे बड़ी नहीं मानता, लेकिन कल जब तू पराये घर जाएगी तो वहाँ तुझे कोई थोड़े ही छोटा मानेगा। वहाँ भी यदि तू इसी तरह धमाचौकड़ी मचाएगी तो वो लोग मुझे ही उलाहना देंगे।

अच्छा अब तू ही बता, क्या तू वहाँ पर मेरा सिर नीचा होने देगी?

नहीं पापा, मैं आपका सिर कभी नीचा नहीं होने दूंगी। आप क्या समझते हैं मैं इतना क्यों उछलती–कूदती रहती हूँ, हँसती हूँ, आपको भी हँसाती हूँ। मुझे पता है आप भी माँ को बहुत याद करते हैं। कई बार मैंने उनकी तस्वीर के सामने आपको अपनी भींगी पलकों को पोंछते हुए देखा है। मैं ये सब इसीलिए करती हूँ कि आपको माँ की कभी याद ना आए, एक पल के लिए भी आपको उदासी छू ना सके।

शायद आपको पता नहीं पापा मैं भी माँ को बहुत याद करती हूँ मैं अपना मन बहलाने के लिए ही ये सब करती हूँ ताकि घर का सन्नाटा हम लोगों को डस ना सके।

इतना कहकर मीतू भावुक हो उठी, उसकी भावना का बाँध जब टूटा तो, आँसुओं के तार बेतार होकर उसकी आँखों से बहने लगे।

नरेन्द्र ने आगे बढ़कर उसे चुप कराते हुए कहा–''अरे पगली, तू तो बड़ी होशियार निकली मैं तो तुझे निराबुद्धु ही समझता रहा।''

नरेन्द्र ने ये बात मीतू को हँसाने एवं उसे चुप कराने के लिए कही, पर मीतू के आँसू थमने का नाम नहीं ले रहे थे।

आखिर नरेन्द्र को उसे चुप कराने के लिए काफी मशक्कत करनी पड़ी। जब मीतू चुप हुई, तो नरेन्द्र ने कहा– ''चलो मीतू, आज कहीं घूमने चलते हैं, परन्तु मीतू ने ये कहते हुए मना कर दिया कि उसका मन बिल्कुल नहीं है।''

वह चुपचाप जाकर दुःखी मन से अपने कमरे में लेट गई। अब नरेन्द्र को मन–ही–मन अपने आप पर गुस्सा आ रहा था, कि उसने अच्छे खासे माहौल को खराब कर दिया, बेवजह उसने अपनी लाड़ली को रुला दिया। नाहक ही उसने मीतू की दुःखती रग पर उँगली रख दी। मीतू कुछ देर तक चुपचाप लेटी रही फिर उसे ना जाने क्या सूझा, वह चुस्ती–फुर्ती के साथ उठी हाथ मुँह धोया और कपड़े बदलकर नरेन्द्र के सामने खड़ी हो गई।

नरेन्द्र आँखें बंद किए तथा कुहनी को आँखों पर रखे हुए चुपचाप लेटा हुआ था।

मीतू कुछ देर तक खड़ी खड़ी इधर–उधर देखती रही, फिर अपने पापा से बोली।

''अरे अभी तक आप तैयार नहीं हुए, चलो जल्दी से तैयार हो जाओ, नहीं तो मीतू मल्होत्रा की गाड़ी छूटने वाली है।''

मीतू की बात सुनकर नरेन्द्र अपनी हँसी ना रोक पाया, वह जोर से हँस पड़ा। पापा का साथ देते हुए मीतू भी खिलखिलाकर हँस पड़ी थोड़ी देर के लिए छाया हुआ सन्नाटा मीतू की खनकती हँसी के साथ काफूर हो गया। मीतू ने कहा– ''पापा जल्दी तैयार हो जाओ। देर मत करो आज तो मुझे खूब जी भरकर सैर–सपाटा करना है और ढेर सारा सामान भी खरीदना है।''

''भाई क्या–क्या खरीदना है? जरा मुझे भी तो बता दो।'' नरेन्द्र बोला।

बड़ी लम्बी चौड़ी लिस्ट है पापा! दो दिन पहले ही बनाकर रख ली थी। मीतू बोली।

लेकिन इतना सारा सामान का करोगी क्या मेरी बच्ची? नरेन्द्र बोला। भूल गए ना, हर बार मुझे ही याद दिलाना पड़ता है। अरे बाबा, परसों मेरा जन्मदिन है, बहुत सारे कपड़े तथा खाने–पीने का भी सामान लगेगा ना।

अच्छा मुझे माफ करना, नरेन्द्र ने अपने कान पकड़ते हुए कहा। केवल माफी माँगने से काम नहीं चलेगा पापा, सामान तो दिलाना ही पड़ेगा, मीतू दुलराते हुए बोली।

ठीक है, ठीक है, खरीद लेना, जो भी खरीदना है यदि

तू कहेगी तो पूरा का पूरा बाजार ही खरीद दूँगा। नरेन्द्र बोला।

यदि मैं पूरा बाजार खरीद लूँगी तो दूसरे लोगों को तो खाली हाथ ही लौटना पड़ेगा, मीतू हँसते–हँसते बोली।

अब तक नरेन्द्र तैयार हो चुका था, दोनों बाजार गए उस दिन खूब घूमे–फिरे। मीतू ने अपनी मनपसंद चीजों का जी भरकर स्वाद लिया, झूले, झूले तथा खूब सारी खरीददारी की।

मीतू ने कहा, पापा! अब मेरी खरीददारी तो पूरी हो गई चलो घर चलते हैं। इतना कहकर दोनों घर के लिए चल दिए।

समय बीतता गया, मीतू बड़ी होती गई, परन्तु उसके स्वभाव में कोई परिवर्तन नहीं आया। बाल सुलभ चेष्टाएँ सदैव उसके मन में हिलोरें ही मारती रहती थीं।

मीतू ने अब तक एम.एस.सी की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली थी। नरेन्द्र अब उसका विवाह शीघ्र ही कर देना चाहता था वह सोचता था कि अपनी खुशी के लिए वह कब तक इसे घर में बिठाए रखेगा। एक–ना–एक दिन तो उसे घर से विदा करना ही पड़ेगा।

मीतू एक दिन कॉलेज गई हुई थी। नरेन्द्र घर पर था उसने किसी जरूरी काम से ऑफिस से छुट्टी ले रखी थी वह सोफे पर बैठा हुआ कुछ कागजात उलट–पलट रहा था। तभी घंटी बजी।

नरेन्द्र ने सोचा मीता आ गई, वह झट से उठ खड़ा हुआ। उसने जाकर दरवाजा खोला, देखा तो सामने उसके बचपन का मित्र अभिषेक खड़ा हुआ था। साथ ही उसका बेटा विराट भी था।

नरेन्द्र उसे देखते ही बोला ''अरे अभिषेक तू।''

हाँ, नरेन्द्र मैं, इतना कहकर दोनों एक दूसरे के गले लग गए।

विराट इतनी प्रगाढ़ दोस्ती देखकर मन–ही–मन बहुत खुश हुआ, अभिषेक और नरेन्द्र दोनों की आँखों में, आँसू उमड़ आए।

नरेन्द्र ने सोफे की तरफ इशारा करते हुए कहा– ''बैठो अभि, वर्षों बाद मिले हो, जी तो करता है मैं तुमसे बहुत शिकायत करूँ। लेकिन शिकायत करके वक्त की नजाकत को कम नहीं करना चाहता।''

अभिषेक बोला, क्या बताऊँ नरेन्द्र, जब से लन्दन में बसा हूँ तब से इंडिया आना बहुत कम हो पाता है। ऐसा नहीं कि मैं तुम्हें भूल गया हूँ।

अरे। तुम तो मेरे हृदय में बसे हो नरेन्द्र, मेरा बस चले तो तुम्हें भी अपने साथ ले चलूँ।

नहीं अभिषेक, इस मामले मैं तुम्हारा साथ बिल्कुल नहीं दे सकता। मुझे तो अपना देश ही प्यारा है।

अरे! जो सुगंध यहाँ की माटी में है, वो लंदन की माटी में कहाँ? तुम ठीक कहते हो नरेन्द्र, लेकिन क्या करूँ? मेरी कुछ मजबूरियाँ थी जिसके कारण वहाँ बसना पड़ा।

अच्छा अभी बता, तेरा भारत आना कैसे हुआ? नरेन्द्र ने बड़ी तत्परता से पूछा।

अभिषेक बोला– ''ये मेरा बेटा विराट है, इसी के रिश्ते के सिलसिले में मुझे भारत आना पड़ा। भाई, परायी धरती पर रहता जरूर हूँ लेकिन बहू हिन्दुस्तान की ही लाना चाहता हूँ।'' सोचा यहाँ तक आया हूँ तो तुमसे भी मिलता चलूँ अच्छा, तू ये बता, अकेले ही बहुत देर से गपशप किए जा रहा है, भाभी को कहाँ छिपा रखा है। वो कहीं दिखाई नहीं दे रहीं।

''नरेन्द्र, मैं तो आज भाभी के हाथ के गरमा–गरम पकौड़े और चाय पीने ही आया हूँ।'' भाभी के हाथ के पकौड़ों में जो स्वाद है, वो सारे हिन्दुस्तान में कहाँ? दुनियाँ छान मारी लेकिन भाभी जैसे स्वादिष्ट पकौड़े खाने को तो दूर देखने तक को नहीं मिले। क्यों, नरेन्द्र में सच कह रहा हूँ ना?

नरेन्द्र चुप रहा, उसके पास बोलने को शब्द ही नहीं थे। क्या बात है नरेन्द्र, तुम चुप क्यों हो? प्रश्न भरी निगाहों से अभिषेक नरेन्द्र की तरफ देखकर बोला।

नरेन्द्र तुम कुछ बोलते क्यों नहीं, अभिषेक पुनः बोला। क्या बताऊँ अभि, तुम्हारी भाभी अब इस दुनियाँ में...। ऐसा कहते–कहते नरेन्द्र का गला भर आया।

''ओह माय गॉड'' तुम ये क्या कह रहे हो नरेन्द्र?

मैं बिल्कुल सच कह रहा हूँ, मेरे दोस्त। लेकिन इतनी

जल्दी ये सब हुआ कैसे? अभिषेक बोला। बस एकाएक, ना कोई बीमारी, ना ही कोई तकलीफ मैं तो आज तक नहीं समझ पाया।

तो तुम इतने बड़े घर में अकेले ही, अभिषेक बोला।

नहीं, मेरी बेटी मीतू और मैं दोनों ही रहते हैं, नरेन्द्र बोला, क्या मुझे अपनी बेटी से नहीं मिलवाओगे नरेन्द्र, अभिषेक ने कौतुहल पूर्वक कहा। अभी मीतू घर में नहीं है। कॉलेज गई है। आती ही होगी नरेन्द्र बोला। सलवार कुर्ती पहने हुए कंधों पर छोटा सा पर्स टांगे कोई मनपसंद गीत गुनगुनाती हुई मीतू कमरे में घुसी। अचानक किसी अजनबी को देखकर उसका मुँह बंद हो गया। तभी नरेन्द्र ने अपनी बेटी मीतू का परिचय कराते हुए अभिषेक से कहा।

''अभि, ये है मेरी बेटी मीतू।''

मीतू ने हाथ जोड़कर अभिवादन किया। तभी अभिषेक बोल उठा, ''मीतू ये हैं मेरा बेटा विराट'' मैं और नरेन्द्र बचपन के मित्र हैं, हम दोनों को मित्रता बहुत गहरी हुआ करती थी, वक्त की कमी के कारण आज हम दोनों वर्षों बाद मिल रहे हैं।

मीतू ने विराट को देखा, तो वह कुछ सकुचा सी गई फिर बोली ''विराट'' बहुत अच्छा नाम है अंकल।''
इतना कहकर वह अन्दर चली गई। कुछ ही देर में वह अन्दर से नाश्ता पानी लेकर आई। अभिषेक बोला बेटा, परेशान मत हो, मेरे पास बैठो, इसमें परेशानी की क्या बात है अंकल, घर आये मेहमान का स्वागत करना यही तो है इंडियन कल्चर, बस मैं यू गई और यू आई।

मीतू रसोई घर में गई उसने झटपट गरमा-गरम पकौड़े और चाय बनाई। तश्तरी में पकौड़े और चाय लेकर वह अभिषेक से बोली लीजिए अंकल अदरक वाली चाय पीजिए और साथ में गर्मागर्म पकौड़े का स्वाद भी लीजिए। अंकल चाय पीकर मजा आ जाएगा, ये मीता मल्होत्रा के हाथों की चाय है।

मीतू की बात सुनकर कमरा हँसी ठहाकों से गूंज उठा, अभिषेक बोल पड़ा ''भाई, बड़ी प्यारी बिटिया है अपनी, क्या खूब बातें करती है, नरेन्द्र तो जरा भी बोर नहीं होता होगा।''

अभिषेक ने चाय का एक घूंट पीते ही मीतू को शाबासी दे दी।

मीतू, चाय बहुत अच्छी बनाई है, क्या खूशबू है, साथ ही पकौड़े भी गजब के बने हैं, बिल्कुल भाभी के हाथ का स्वाद है इसमें। क्यों विराट, सच कहा ना मैंने।

सचमुच डैड, विराट मुस्करा दिया।

अभिषेक को मीतू का भोलापन और उसके बोलने का अंदाज बहुत भाया, वह मन-ही-मन मीतू को अपनी बहू बनाने के बारे में सोचने लगा, परन्तु वह नरेन्द्र से यह कहने का साहस ना जुटा सका। अभिषेक थोड़ा गंभीर हो गया।

अभिषेक की गंभीरता को ताड़ते हुए नरेन्द्र बोला-क्या बात है अभि? तुम अचानक चुप क्यों हो गए? कोई खास बात नहीं, बस यूँ ही कुछ सोच रहा था अभिषेक बोला। अच्छा, अभि, ये बता कितने दिनों की छुट्टी लेकर आया है, नरेन्द्र ने पूछा।

मुझे आज ही, रात की फ्लाइट से जाना है। क्या करें समय का अभाव जो है, अभिषेक बोला। इतनी जल्दी भी क्या है, नरेन्द्र बोला। अभि ने कहा- जिस काम से आए थे, वह काम भी नहीं हुआ। कौन सा काम था? नरेन्द्र ने जानना चाहा। अपने विराट के लिए एक लड़की देखने आया था परन्तु लड़की पसंद नहीं आई। अभिषेक ने कहा। फिर तो इतनी दूर से आना व्यर्थ ही रहा, नरेन्द्र बोला।

चलो इसी बहाने स्वदेश आना और तुझसे मिलना भी हो गया। अभिषेक ने कहा। अच्छा अभी, तू तो रहता विदेश में है, परन्तु बहू यहाँ की क्यों लाना चाहता है? नरेन्द्र ने परिहास के मूड़ में कहा।

नरेन्द्र की बात सुनकर अभिषेक बोला, ''मैं विदेश में रहता जरूर हूँ, लेकिन विदेशी सभ्यता नहीं पसंद करता। जो लोग कपड़ों की तरह इंसानों को बदलते हैं, मैं उन लोगों से रिश्ते नहीं जोड़ना चाहता।''
तुम, यह बात बिल्कुल ठीक कहते हो, नरेन्द्र ने तपाक से कहा। मैं तो कह रहा था नरेन्द्र, अभिषेक थोड़ा अटकते अटकते बोला, हाँ, हाँ, कहो अभि, क्या कहना चाहते हो?

मैं यह कहना चाहता था नरेन्द्र कि अपना विराट कोई बुरा तो नहीं यदि तुम चाहो तो हम कल की दोस्ती को एक नया रूप दे दें। अभिषेक ने बोला।

मैं कुछ समझा नहीं नरेन्द्र थोड़ा विस्मित स्वर में बोला।

इसमें ना समझने जैसी क्या बात है? हम दोनों दोस्त की जगह समधी–समधी बन जाएँ तो कैसा रहेगा?
बिल्कुल ठीक रहेगा, अभी तू तो बहुत दूर की सोचता है मैं तो यह बात सोच ही नहीं पाया था, तुमने तो मेरे मन की बात छीन ली।

लेकिन अगले ही क्षण नरेन्द्र दुःखी होकर बोला– अभि, मीतू मेरी इकलौती बेटी है। मैंने उससे दूर रहने की कभी कल्पना ही नहीं की है। फिर भी दुनियाँ की लोकरीति तो निभानी ही पड़ेगी तुम बुरा मत मानना अभी, मैं उसे विदेश भेजने का साहस नहीं जुटा पाऊँगा। बेटी इतनी दूर भेजकर जीते जी मर जाऊँगा। अगर तू इंडिया में होता तो...। मैं तो यूँही मजाक कर रहा था, नरेन्द्र तुम्हारी भावनाओं की कद्र है मुझे, तुम चाहो तो मैं एक से बढ़कर एक रिश्ते में अपनी मीतू के लिए बता सकता हूँ।

हाँ, हाँ जरूर बताओ अभी, कहीं–न–कहीं तो बात चलानी ही पड़ेगी। नरेन्द्र ने कहा।

अभिषेक बोला– ''मेरी एक बहिन यहीं रहती है उसके दो बेटे व एक बेटी है, बड़ी बेटी दर्शना का ब्याह हो चुका है। बाद के दो बेटे दर्शन वा सुयश हैं।''

दर्शन काफी पढ़ा–लिखा रोबदार वा उच्चशिक्षित है, साथ ही एक बड़ा व्यवसायी भी है, अपनी मीतू की जोड़ी खूब जमेगी, तुम कहो तो मैं बात चलाऊँ।

हाँ, हाँ जरूर करो, तुमने तो मेरी चिन्ता ही दूर कर दी है नरेन्द्र, चिन्ता मुक्त होकर बोला। तो ठीक है, नरेन्द्र मैं चलता हूँ। अभी बहन के यहाँ भी जाना है। अगर भगवान ने चाहा तो फिर जल्दी ही मिलेंगे।

अभिषेक ने नरेन्द्र के कन्धों पर हाथ रखते हुए कहा। अभिषेक और विराट दोनों ही अपनी गाड़ी में बैठकर चले गए। नरेन्द्र उन्हें भेजकर अन्दर आ गया। उसने इधर–उधर देखा, मीतू सो रही थी, नरेन्द्र बैठा–बैठा अखबार के पन्ने पलटाने लगा। लगभग एक घंटे में अभिषेक अपनी बहन शारदा के यहाँ पहुँच चुका था। बहुत दिनों बाद भाई को घर आया देखकर बहन ने काफी आवभगत की। चाय–पानी के साथ बातचीत का सिलसिला शुरू हुआ। मौका पाकर अभिषेक ने बहन से मीतू के रिश्ते की बात चलाई। तथा जी भरकर बाप बेटी की प्रशंसा भी की।

अभिषेक के मुँह से इतने अच्छे रिश्ते की बात सुनकर शारदा फूली ना समाई। ठीक है भइया जल्दी करो, कहीं इतनी अच्छी लड़की हाथ से निकल ना जाए।
शारदा की उतावली देखकर विराट ने मजाक के लहजे में बुआ से कहा, क्यों बुआ? क्या दर्शन भैया को दूसरी लड़की मिलने वाली नहीं।

अरे ! चुप कर, मेरा मखौल उड़ाता है, अरे! ऐसी लड़कियाँ आज कहीं चिराग लेकर ढूँढ़ने से भी नहीं मिलती हैं इसलिए मुझे जल्दी हो रही है लेकिन तुम आजकल के लड़के क्या समझो इस बात को।
अभिषेक ने अपनी बहन से कहा, यदि आप कहें तो मैं अभी नरेन्द्र को बुलवा लूँ।

शुभ काम में देर कैसी, अगर ये रिश्ता तेरे सामने ही पक्का हो जाएगा तो अलग ही खुशी होगी। अभिषेक बोला ठीक है, उसने नरेन्द्र को फोन कर बहन के घर पर ही बुलवा लिया, नरेन्द्र भी लगभग एक सवा घंटे में शारदा के घर पहुँच चुका था।

बातचीत का सिलसिला प्रारम्भ हुआ। दर्शन के ताऊजी स्वयं बड़े पंडित थे, कुण्डली का मिलान हुआ। ब्याह अच्छे गुणों से बन गया। दर्शन दहेज का विरोधी था उसके पास किसी चीज की कमी ना थी। अतः दान दहेज की कोई बात नहीं निकली।

मीतू की तस्वीर देखकर शारदा की आँखें चुधियाँ गई, कितनी बड़ी– बड़ी सुन्दर गहरी आँखें, ऊँचा चौड़ा माथा, कितना भोलापन है चेहरे पर सुन्दरता स्वयं लजा जाए इसे देखकर। शारदा बहू की सुन्दरता का बखान करते नहीं थक रही थीं। नरेन्द्र की बातचीत ने भी उन्हें अच्छा खासा प्रभावित किया था।

बातचीत तय हो गई तो नरेन्द्र ने शारदा से जाने की इजाजत माँगी। शारदा ने खुशी मन से नरेन्द्र को यह कहते हुए विदा किया कि वह मीतू के प्रति बिल्कुल निश्चिन्त रहें उसके जीते जी मीतू को किसी प्रकार का दुःख नहीं होगा।

नरेन्द्र ने कहा—अब तो आपकी छत्रछाया मिलेगी उसे, माँ के स्नेह का अभाव सदा से ही उसे खलता रहा है, अब उसकी कमी आपकी ममता उसे पूर्ण कर देगी। इतना कहकर नरेन्द्र ने शारदा से हाथ जोड़ते हुए विदा ली। अभिषेक भी बहुत खुश था। नरेन्द्र ने उसे धन्यवाद दिया। शारदा की बेटी दर्शना ससुराल में थी जल्दी—जल्दी में शारदा उसे बुला ना सकी थी परन्तु सुयश ने उसे सारी बातें दूरभाष पर ही बता दी थी। दर्शना को जब इस रिश्ते की बात पता चली तो उसने यह कहते हुए माँ से एतराज जताया कि ''माँ। ऐसी लड़की को घर में बहू बनाकर लाओगी, जिसकी ना माँ है और ना ही कोई भाई बहन।''

शारदा बोली तो क्या हुआ बेटी? उसके माँ, भाई, बहन नहीं हैं तो उसमें उस बेचारी का क्या दोष?''

दोष है माँ! मैं तो कहती हूँ कि मीतू एक अभागिन लड़की है। नहीं तो भला उसकी माँ उसे बचपन में छोड़कर क्यों चली जाती। दर्शना बोली।

जीवन और मृत्यु पर किसी का वश नहीं चलता दर्शना और ना ही किसी की मृत्यु का कारण ही, कोई बनता है। माँ बोली।

दर्शना बौखला उठी, वह बोली यदि आप पर उसी लड़की का भूत सवार है तो ठीक है, परन्तु मैं तो सदा इस रिश्ते के खिलाफ रहूँगी।

मीतू और दर्शन की जोड़ी ईश्वर ने पहले से ही तय कर रखी थी, अतः दर्शना की खिलाफत भी इस रिश्ते को तोड़ ना सकी।

मीतू के पापा नरेन्द्र भी इस रिश्ते से काफी हद तक प्रभावित थे उन्हें लड़के और उसकी माँ का स्वभाव तथा व्यवहार काफी पसंद आया था। उसकी बेटी सचमुच यहाँ कितनी खुश रहेगी इस कल्पना मात्र से ही नरेन्द्र फूला नहीं समा रहा था। साथ ही साथ इस रिश्ते में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले अभिषेक का भी मन—ही—मन धन्यवाद दे रहा था। समय तारीख सब तय हो चुका था, छह महीने बाद ब्याह होना था, दोनों पक्षों के अति उत्साह में यह समय कैसे निकला कुछ पता ना चला। दोनों तरफ जोर—शोर की तैयारियाँ चल रहीं थीं अभिषेक भी एक सप्ताह की छुट्टी लेकर आ चुका था। होते करते वही दिन आ गया, जिस दिन की कल्पना मात्र से ही नरेन्द्र का कलेजा फटने लगता था। बारात दरवाजे पर आ चुकी थी, स्वागत सत्कार बड़ी उत्साह पूर्वक हो रहा था, नरेन्द्र बारात के स्वागत में एड़ी चोटी का जोर लगा देना चाहता था, किसी को कहने सुनने का वह कुछ भी अवसर नहीं देना चाहता था। बाराती खुश थे, वह भी इतना जोरदार स्वागत देखकर अघा नहीं रहे थे।

रात बीती, सुबह हुई, धीरे—धीरे विदा की बेला करीब आ रही थी। नरेन्द्र ठगा सा सोच रहा था। क्या? मीतू आज सचमुच इस घर से विदा हो जाएगी? मुझे छोड़कर चली जाएगी? नरेन्द्र का मन यह सोच—सोचकर बार—बार रो उठता था। मीतू के बचपन से लेकर आज तक का एक—एक दिन, एक—एक बातें, उसकी आँखों के सामने से गुजरते जा रहे थे।

नरेन्द्र अपने आपको सम्हाल पाता कि तभी अभिषेक सिर पर पगड़ी बाँधे तथा माथे पर तिलक लगाए हुए नरेन्द्र के पास आकर खड़ा हो गया। अरे नरेन्द्र ! क्या बात है? तू तो बहुत परेशान लग रहा है। अभिषेक ने कहा।

हाँ, दोस्त, आज मैं सचमुच बहुत परेशान हूँ। सोचता हूँ बेटी को कैसे विदा कर पाऊँगा?

धैर्य रखो मेरे मित्र, अपने हृदय को कठोर रखो। विदाई की यह बेला सचमुच बड़ी दर्दनाक होती है। लेकिन दुनियाँ की रीत है, निभानी तो पड़ती है ना। ऐसा कहकर अभिषेक ने नरेन्द्र को सीने से लगा लिया और दोनों ही रो पड़े।

विदाई की पीड़ा इतनी असहनीय होगी मैंने पहले कभी नहीं सोचा था। नरेन्द्र रोते हुए बोला। अपने आपको सम्हालों दोस्त, मीतू को जीवन में कोई कष्ट नहीं होगा। यह एक मित्र को एक मित्र का वचन है, देखना नरेन्द्र, मीतू

वहाँ इतनी खुश रहेगी। कि एक दिन तुम्हें भी भूल जाएगी। विदाई का समय हो चुका था, घर के सामने फूलों से सजी कार खड़ी हुई थी। सारी औपचारिकताएँ पूरी हो चुकीं थीं मीतू सजी–धजी बिल्कुल छोटी सी गुडिया के समान प्रतीत हो रही थी। कल की अल्हड़ चंचल मीतू, आज अनायास ही गम्भीर हो चुकी थी, अपने पिता नरेन्द्र के प्रति चिन्ता के भाव उसकी आँखों में स्पष्ट रूप से पढ़े जा सकते थे। आंसुओं से सराबोर चेहरे को लिए वह अपनी सखियों के साथ आहिस्ता आहिस्ता कदम रखती हुई आगे की ओर बढ़ रही थी। परन्तु उसकी आँखें अपने पापा नरेन्द्र को ही ढूँढ़ रही थीं। अभी वह कुछ कदम ही बढ़ी थी कि सामने नरेन्द्र को खड़ा देखकर वह उनके सीने से लिपट गई।

''पापा मैं आपको छोड़कर कहीं नहीं जाऊँगी, ऐसा कहकर वह फूट– फूट कर रो पड़ी। नरेन्द्र भी फफक–फफक कर रो पड़ा, फिर मीतू के सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद देते हुए बोला, जाओ बेटी सदा सुखी रहो, आज से वहीं तुम्हारा घर है इतना कहकर उसे अपने कलेजे से लगाए हुए नरेन्द्र कार के पास तक ले गया।''

अभिषेक ने कार का दरवाजा खोला, नरेन्द्र ने मीता को बिठा दिया। मीता जोर से रोई ''पापा!''

नरेन्द्र ने कहा, जाओ बेटी, मेरी लाज रखना, तुम्हारी माँ होती तो शायद तुम्हें कुछ और सीख भी देती, पर मैं तो...। इतना कहते–कहते नरेन्द्र की वाणी अवरुद्ध हो गई। आँखों से आँसुओं की झड़ी लग गई।

अभिषेक ने उसे समझाते हुए जाने की इजाजत माँगी। बारात विदा हो गई।

मीतू क्या गई, नरेन्द्र को लगा जैसे उसकी पूरी दुनियाँ ही उजड़ गई हो। वह पूरे घर में अर्द्धविक्षिप्त सा घूमता रहा, बेटी की विदा की पीड़ा को आज उसने प्रत्यक्ष अनुभव किया था। मीतू की यादों से जुड़ी प्रत्येक वस्तु को उठा–उठा कर देख रहा था।

घर में ज्यादा मेहमान ना थे, जो भी थे जाने की तैयारी में थे, अगले दिन तक पूरा घर खाली हो चुका था। यह खाली खाली घर नरेन्द्र को काटने को दौड़ता था। आज वह सचमुच अकेलापन महसूस कर रहा था। घर काफी फैला बिखरा पड़ा हुआ था। नरेन्द्र अपने अकेले पन से बचने के लिए घर की साफ–सफाई में लग गया।

थोड़ा बहुत सामान ही उसने अभी तक इधर–उधर किया था कि इसी दौरान उसे मीतू की एक सुन्दर सी गुड़िया नरेन्द्र को मिल गई। बड़ी–बड़ी काली सुन्दर आँखों वाली यह गुड़िया मीतू को अत्यंत प्रिय थी। इस गुड़िया को देखते ही नरेन्द्र ना जाने कहाँ खो गया? अतीत के पन्ने एक–एक कर उड़ते गए और नरेन्द्र उसको झाँकता गया।

उसे याद आया जब मीतू तीन वर्ष की थी, तो उस गुड़िया को लेने के लिए कितना रोई थी। दिन भर उसे साथ ले–लेकर घूमती थी। नरेन्द्र को एक पल के लिए लगा कि वह गुड़िया ना होकर साक्षात उसकी बेटी ही है। उसने उस गुड़िया को उठाकर अपने सीने से लगा लिया। आँखों से आँसुओं की बड़ी–बड़ी बूँदों को टपकाता हुआ बोला, ''एक बेटी गई दूसरी मिल गई, लेकिन याद रखना, मैं कभी तुझे घर से विदा नहीं करूँगा, तुम्हें यही रहना होगा, हरदम मेरे पास, मेरे साथ।

आलेख

ढाई आखर प्रेम का..

:सरस्वती कामऋषि

भारत की भूमि ऋषि, मुनियों, ज्ञानियों एवं मनीषियों की भूमि है, अनुभवी प्रत्यक्ष दर्शियों में भारत के इतिहास की अनेक अनेक सुखद व्याख्याएं दी है हम सुनते आए हैं पढ़ते आए हैं, कि भारत सोने की चिड़िया हुआ करती थी। अकूत स्वर्ण भारत में था सोमनाथ के मंदिर से स्वर्ण की चोरी मोहम्मद गौरी कर अफगानिस्तान भाग गया दर्जनो नाव में भरकर।

धन से, ज्ञान से, अनुभवो से, वैभव से, खनिजों से, प्राकृतिक संसाधनों से परिपूर्ण भारत की भूमि को वीर प्रसविनी धरती मां भी कहा गया। आज की पीढ़ी भूतकाल की कल्पना तो इतिहास में लिखे वृतांतों से ही जान पाती है परंतु उन्हें इतिहास से सकारात्मक सत्य पढ़ने को मिले तो ही उनका ज्ञानवर्धन संभव है अन्यथा पथ भ्रमित होने का संदेह रहेगा। राष्ट्र के रूप में विकासशील देश से विकसित राष्ट्र बनने की दिशा में आगे बढ़ने की उत्कट कामना लिए भारत कदम बढ़ा रहा है ऐसी चुनौती पूर्ण पथ पर सफलता पाने के लिए हमें उन महान दार्शनिकों और सामाजिक चिंतकों के विचारों को सुनकर, समझकर पर्याप्त सम्मान और स्थान देना चाहिए उनके अनुभव हमारे युवाओं व बच्चों को जानना जरूरी है। देश की सर्वमान्य शक्ति प्रजा है और प्रजा की सर्वमान्य शक्ति संस्कृति है और मनीषियों के अनुसार शिक्षा, संस्कृति व मूल्यों का संरक्षण करना देश के हित में है देश की दशा और दिशा इन्हीं आदर्शों पर निर्भर है। भारतीय जनमानस की चेतना का विकास बौद्धिक स्तर का विकास इन मूल्यों के आधार पर होना आवश्यक है। भारतीय जनमानस के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक विकास पर ही राष्ट्र का विकास संभव होगा। इसलिए शिक्षा, स्वास्थ्य, संस्कार, नैतिक मूल्यों पर राष्ट्र को ध्यान देना होगा।

सदियों से हम यह सुनते आए हैं कि दो ही शक्तियां हर युग में प्रबल रही हैं सकारात्मक और नकारात्मक इन्हें सुर–असुर, देव–दानव, सदाचारी–दुराचारी, अच्छाई–बुराई, सत्य–असत्य, कौरव–पांडव आदि रूपों में समझते आए हैं। कहने का

तात्पर्य यह है कि एक निश्चित कालखण्ड में एक निश्चित समय तक इस देश की धरती पर इन दो शक्तियों ने ही राज किया कभी नकारात्मक शक्ति का प्रभाव रहा तो कभी सकारात्मक शक्ति का प्रभाव रहा। द्वंद रहेगा हमेशा इन्हीं दो शक्तियों के बीच हर बार विजय अच्छाई को ही मिली सत्यमेव जयते। हर युग में ज्ञानियों मनीषियों संतों ने ही इन कठिन परिस्थितियों से देश को संरक्षित किया सही दिशा प्रशस्त की।

बहुत समय पहले ऐसी ही चुनौतियां पूर्ण कालखण्ड में जब मुगलों का शासन था, तब एक ऐसे संत ने भारत की भूमि पर जन्म लिया जिनके द्वारा ज्ञान का ऐसा प्रकाश फैला जिससे भारत ही नहीं पूरा विश्व प्रकाशित हुआ इनकी जन्म के समय का जो सामाजिक वातावरण था वह बहुत ही विषाद, दुःख निराशा में डूबी हुई असहाय जनमानस का था। युद्ध की अधिकता और वीरों की वीरगति के उपरांत पराजय पारिवारिक अस्थिरता का वातावरण था। दिग्भ्रमित जनमानस इधर–उधर किसी ठोस आधार को तलाश रही थी। यह उस समय देश काल वातावरण निर्माण हुआ था, जब संत कबीर जी का जन्म हुआ।

जनश्रुति के अनुसार कबीर दास जी का जन्म एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था, जन्म के बाद उन्हें उनकी मां ने लहरतारा तालाब के किनारे छोड़ दिया। नीमा नीरू नमक जुलाहा दंपति ने उस शिशु को अपना लिया उन्होंने ही उनका पालन–पोषण किया। वाराणसी में जन्मे इस बालक को एक मुस्लिम परिवार ने अपनाया और उनका लालन–पालन कर योग्य बनाया। सामाजिक अव्यवस्था और मान्यताओं; कुरीतियों भेदभाव की शिकार कबीर भी हुए उन्हें बचपन में पढ़ने की उम्र में समाज की दकियानूसी विचारों ने ठुकराया विद्यालयों में प्रवेश नहीं मिला कहा तुम मुसलमान हो, मदरसों में दाखिला नहीं मिला कहां तुम हिंदू हो और इस तरह भेदभाव की चक्की में पीसकर कबीर शिक्षा नहीं पा सके। उन्होंने अपने पिता का व्यवसाय कपड़ा बुनने का ही अपना लिया। कहा जाता है कि उन्हें धर्म व अध्यात्म की शिक्षा गुरु रामानंद जी से मिली उनके सानिध्य में उनके भीतर प्रखर आंतरिक ज्ञान का प्राकट्य हुआ और वे अपने विचारों को भावों को कपड़ा बुनते समय शब्दों में पिरो कर सुनाया करते थे।

सन् 1398 ई. में उत्तर प्रदेश के वाराणसी में जन्मे बालक कबीर ने कालांतर में अपने प्रखर ज्ञान चक्षुओं से सामाजिक ताना–बाना को देखते रहे और समझते रहे और उन्होंने यह मन बनाया कि वे समाज की दशा–दिशा के सुधारक बनना चाहते थे। हताश निराश जन मानस को उन्होंने निर्गुण निराकार भक्ति का संदेश दिया। हिंदी साहित्य के इतिहास के अनुसार कबीर ने निर्गुण भक्ति शाखा का प्रतिपादन किया। निराकार ईश्वर की ओर आकर्षित कर, जन मानस को जीवन का आधार दिया।

कबीर ने अपनी वाणी से ज्ञान और प्रेम का संदेश दिया उनकी वाणी में जो ओज था जो मधुरता और प्रखरता थी, वह लोगों को आकर्षित करती थी। जगह–जगह कबीर ने सत्संग लगाए और सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक विसंगतियों को दूर करने के लिए अपनी बात रखी। उन्होंने उस समय समाज में फैली हुई कुरीतियां, अंधविश्वास, भेदभाव, ऊंच–नीच अमीर गरीब आदि बुराइयों को प्रजा जनों के मन में मस्तिष्क से दूर करने का प्रयास किया कबीर की वाणी को उनके शिष्यों के द्वारा लिपिबद्ध किया गया और बीजक के रूप में आज हमें उपलब्ध हैं कबीर दास जी की वाणी।

कबीर दास जी ने साखी, सबद लिखी है उनकी भाषा पंचमेल, खिचड़ी अर्थात पांच भाषाओं के शब्दों का प्रयोग होने के कारण कहा गया है। जीवन के

हर पहलू पर कबीर के दोहे हमें प्रेरणा देते हैं। कबीर अपने देश के लिए सर्वस्व निछावर करने का भाव रखते थे इसलिए सामाजिक व्यवस्था को कुरीतियों को अंधविश्वास से मुक्त करना चाहते थे। वे हर बुराई को अपनी वाणी से प्रतिकार करते थे। आडंबर का प्रतिरोध साखियों में किया गया है।

कांकड़ पत्थर जोरि कै, मस्जिद लिया बनाय।
ता चढ़ि मुल्ला बांग दे क्या? बहरा हुआ खुदाय।।
पोथि पढ़–पढ़ जग मुआ पंडित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम के पढ़े सो पंडित होय।।
तुम कहते हो कागद लेखी, मैं कहता हूं आंखन देखी।
बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर।
कबीरा खड़ा बाजार में मांगे सबकी खैर.......

ऐसे अनेक साखियां कबीर जी के अंतस की प्रखरता को ज्ञापित करते हैं। उनके अनुसार ज्ञान और प्रेम ही समाज को सुधार सकता है।

ढाई आखर प्रेम के....... इन शब्दों में छिपे रहस्य को जो समझ पाया वही जीता अथवा सफल हुआ। कबीर दास जी को रहस्य का कवि माना गया है उनकी एक–एक साखी जीवन के उत्थान के लिए सबसे शक्तिशाली शस्त्र है। उनकी साखियां हमें ज्ञान और प्रेम का वह मार्ग दिखाती हैं जिस पर चलकर हमारा जीवन धन्य बनता है। कबीर की यही साखी आज के संदर्भ, देशकाल, वातावरण और कलयुग की पराकाष्ठा के पहले सामाजिक परिपेक्ष्य में बहुत ही तर्क संगत और अनुकूल बैठती है।

पोथी पढ़–पढ़ जग मुआ, पंडित भया न कोय।
ढ़ाई आखर प्रेम के पड़े से पंडित होय।।

यह सच है कि शिक्षा चाहे जितनी पाले सब ज्ञानी नहीं बन जाते। जो प्रेम के ढाई अक्षर का अर्थ समझ लेते हैं हम आज के संदर्भ में यह साखी इस प्रकार भी विश्लेषित कर सकते हैं संत कबीर दास जी समाज सुधारक कवि थे। उनका यह भाव था कि हर युग में सामाजिक बुराइयां जन्म लेती रहती हैं पर समाज के प्रतिनिधियों की यह जिम्मेदारी है कि वे बुराइयों को बुलंदियों तक न पहुंचाये। उन्हें ज्ञान और प्रेम के अस्त्र से सदा काबू में रखें। बहुत ही रहस्य है इन भावों में।

निष्कर्ष में यह तर्क सबसे उपयुक्त होगा कि शिक्षा और स्वास्थ्य को प्राथमिकता देकर यदि देश के प्रतिनिधियों के द्वारा यह विश्वास प्रजा जनों को दिया जाए तो शिक्षा के समझ और स्वास्थ्य से मन स्थिर होगा ऐसे में प्रेमपूर्ण वातावरण का निर्माण करने में सहयोग प्राप्त होगा। जब तन और मन स्वस्थ होंगे तब सामाजिक गतिविधियाँ अनुकूल होंगी। जो देश राष्ट्र व समाज के जिम्मेदार पदों पर प्रतिष्ठित हैं उन्हें शिक्षा को जीवन में उतारने और प्रेम को आचरण में उतारने पर विशेष ध्यान देना होगा प्रजा को संतान समझते हुए राजा को सद्भावना सद्व्यवहार से प्रेमपूर्ण व्यवहार करना होगा। प्रजा हित में कार्य होगा तो बुराइयां कभी भी सिर उठा नहीं सकेंगी। संत कबीर दास जी का यही सामाजिक सुधार का संदेश है हर युग में ज्ञान और प्रेम ही एक विकसित राष्ट्र की मूल धारणा है।

❖❖❖

परिवार में ही बच्चों को आदर्श नागरिक बनने के संस्कार मिलते हैं

❒ : रमेश चंद्र बादल

महान् दार्शनिक एवं कूटनीतिज्ञ महात्मा चाणक्य के अनुसार 'यथाकुलं तथाऽऽचारः' अर्थात् जैसा कुल होता है वैसा ही चरित्र होता है। बच्चों को परिवार कुटुम्ब (खानदान) में जैसा वातावरण मिलता है उससे ही उनका भावी जीवन बनता है। यदि परिवार के सदस्यों माता–पिता, भाई–बहिन, दादा–दादी, चाचा–चाची आदि का आचरण, व्यवहार, दिनचर्या, आदतें अच्छी हैं तो बच्चों का आचरण चरित्र और आदतें भी अच्छी होंगी। उनका भावी जीवन भी अच्छा बनेगा, क्योंकि बच्चे जैसा देखते हैं वैसा ही वे अनुकरण करते हैं। बच्चों पर प्रभाव उपदेशों का नहीं सामने प्रस्तुत होने वाले आचरण का पड़ता है। सुप्रसिद्ध विचारक ओलिवर गोल्डस्मिथ ने भी कहा है– **'बेहतर उपदेश आप अपने होंठों के बजाय अपने जीवन से दे सकते हैं।'** अर्थात् बच्चे शब्द कम सुनते हैं और आचरण से ज्यादा सीखते हैं।

ओशो ने कहा है कि आप जो बच्चों से करवाना चाहते हैं, उसे स्वयं करें। यदि घर–परिवार के लोग झूठ बोलते हैं, एक दूसरे पर क्रोध करते हैं तो बच्चे भी वही करेंगे। पिता अगर मां का अपमान करता है उसको सम्मान नहीं देता है तो बेटा भी बड़ा होकर अपनी पत्नी से भी वही व्यवहार करेगा। यदि आप अपने जीवन में शांति, प्रेम लाएं तो बच्चे भी वही अनुकरण करेंगे। जैसा बीज बोया जाता है वैसी ही फसल होगी।

विश्व के महापुरुषों का जीवन चरित्र पढ़ने से ज्ञात होता है कि उनको परिवार में माता–पिता की शिक्षा और संस्कार से ही जीवन में कुछ करने की प्रेरणा प्राप्त हुई थी। तात्पर्य यह कि बच्चों को आदर्श नागरिक बनाने के संस्कार केवल परिवार में ही प्राप्त हो सकते हैं। विद्यालयों में तो बच्चों को विभिन्न विषयों की शिक्षा दी जाती है जैसे– हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, विज्ञान कला, गणित, कामर्स, कृषि आदि....। विद्यालयों के पाठ्यक्रम में चरित्र निर्माण अथवा नैतिक शिक्षा (Moral Education) दिए जाने की कोई व्यवस्था नहीं होती। बच्चों को चरित्र निर्माण की शिक्षा और अच्छे संस्कार तो केवल परिवार के वातावरण में ही मिल सकते हैं। इस विषय में अनेक विद्वानों ने परिवार के महत्व को स्पष्ट करते हुए अपने विचार प्रकट किए हैं– कुछ उदाहरण–

बालक नागरिकता का प्रथम पाठ माता के चुम्बन और पिता के दुलार में ही सीखता है। (The child learn the best lesson of citizenship between the kiss of mother and cares of father)

– मेजिनी

परिवार को नागरिक जीवन की शाश्वत पाठशाला कहा है। **– अगस्त काम्टे**

परिवार को सामाजिक गुणों का पालना कहा है।

– जोसेफ रोजेके

परिवार में रहकर ही बालक सहयोग, स्वाभाविक भक्ति, सहानुभूति तथा परोपकार का अर्थ समझता है।

– डब्ल्यू.एच.बेवरेज

संस्कृत में कहा गया है **'परितः वारयति दोषान्'** परिवार व्यक्ति के दोषों को दूर भगाता है। परिवार में ही बालक अनेक प्रकार के सामाजिक गुणों को अनुकरण द्वारा सीखता है और अपने जीवन में एक सफल नागरिक बनता है। परिवार में सभी सदस्यों में आपस में प्रेम और भाईचारा की भावना रहती है। सभी लोग एक दूसरे के लिए भरपूर सहयोग करते हैं। सुख–दुःख में सभी लोग मिलकर काम करते हैं। सभी लोगों में प्रगाढ़ प्रेम की भावना रहती है। ये सभी अच्छाइयाँ परिवार में रहती है। यही परिवार की विशेषता है। कहा गया है **'परि विरयते अनेक स. परिवार'** अर्थात् जो सभी को जोड़ता है वह परिवार है।

समय के परिवर्तन के साथ आज परिवारों में बदलाव देखा जा रहा है। **'संयुक्त परिवार'** प्रथा अब लुप्त होते जा रही है। अब एकल परिवार का चलन शुरू हो गया है। जिसमें केवल **'हम दो हमारे दो'** तक ही परिवार सिमट गए हैं। एकल परिवार में माता–पिता और एक या दो बच्चे ही देखे जा सकते हैं। यहाँ तक कि एकल परिवार में दादा–दादी के लिए भी घर में स्थान नहीं होता वे उपेक्षित जीवन जीने के लिए विवश होकर वृद्धाश्रमों में शरण ले रहे हैं। एकल परिवार में बच्चों को पारिवारिक गुणों की शिक्षा कहाँ से मिले? माता–पिता अर्थोपार्जन में व्यस्त हैं। माता–पिता के पास बच्चों को देने के लिए पर्याप्त समय भी नहीं है। वे विद्यालय से आकर मोबाइल, टी. वी., लेपटाप आदि में अपना समय व्यतीत करते हैं। महानगरों में व्यवसायिक कार्यों में अत्यधिक व्यस्त रहने के कारण पिता को बच्चों के लिए समय दे पाना कठिन हो गया है। वे खर्चों के लिए मनचाही धनराशि अवश्य दे सकते हैं परंतु बच्चों के साथ बातचीत करने उनकी कठिनाइयों को जानने के लिए समय नहीं है। इस दशा को कतई अच्छा नहीं कहा जा सकता है। परिवारों की वर्तमान दशा के संबंध में **आचार्य श्री राम शर्मा** ने कहा है श्हमें व्यक्ति और समाज के बीच की कड़ी की स्थापना करनी चाहिए, जिसका नाम परिवार है।

आज परिवार का स्तर हीन होता जा रहा है. हमें उसका विकास करना चाहिए। परिवार में ही हीरे मोती और जवाहरातें निकलते हैं। परिवार को हमें शिक्षित और संस्कारित करना होगा। लोग विलायत पढ़ने जाते हैं लेकिन वहां से शिक्षा ही ला सकते हैं, संस्कार नहीं। कहा गया है कि वह रिश्ता जो परिवार को वास्तव में बांधता है वह खून का रिश्ता नहीं है बल्कि एक दूसरे के प्रति आदर और खुशी का रिश्ता है। एकल परिवारों में 'मैं' और 'मेरा' की संकीर्ण भावना बढ़ती जाती है। पारिवारिक सदस्यों में प्रेम, सहानुभूति, त्याग, सहयोग, सेवा की शिक्षा और संस्कार बच्चों को कहाँ से मिले? अब पुनः संयुक्त परिवार की अच्छाइयों के विषय में सोचा जाने लगा है। संयुक्त परिवार की कुछ अच्छाइयां इस प्रकार है–

बच्चों की देख–रेख और उनको अकेलापन का अनुभव करने की समस्या नहीं रहती। बच्चों को दादा– दादी का भरपूर स्नेह व मार्गदर्शन मिलता है। बच्चों को परिवार के सदस्यों के आचरण से त्याग, सेवा, अनुशासन, प्रेम और सहानुभूति की शिक्षा और संस्कार भी मिलते हैं। घर की सुरक्षा रहती है। घर का ताला बंद होने पर प्रायः चोरी की घटनाएं होती है। बच्चों को परिवार के बुजुर्गों के अनुभव का लाभ भी मिलता है। बुजुर्गों के पास जीवन के अनुभवों का भण्डार रहता है। इस प्रकार संयुक्त परिवार की अनेक

अच्छाइयों के कारण अब लोग पुन: इस विषय में सोचने लगे हैं। विदेशों में भी संयुक्त परिवार (Joint family) की अच्छाइयों से प्रभावित होकर उसकी आवश्यकता अनुभव करने लगे हैं।

परिवार में बच्चों को आदर्श नागरिक बनाए जाने के विषय में माता– पिता का उत्तरदायित्व सबसे अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। अनेक महापुरुषों को पिता की अपेक्षा माँ से अधिक प्रेरणा प्रोत्साहन और संघर्षों का सामना करने की शिक्षा मिली थी और वे सफलता के शिखर पर पहुंच सके थे। कुछ महापुरुषों के उदाहरण–

ईश्वरचंद्र विद्यासागर ने माँ की इच्छानुसार ही गांव में स्कूल बनवाया, एक दवाखाना (चिकित्सालय) बनवाया तथा अनाथ और निर्धन बच्चों के लिए भोजन की व्यवस्था की थी। इस प्रकार ये तीनों कार्य उत्साहपूर्वक पूरे किए और माँ की इच्छा पूरी की। एक दिन एक विद्वान उनके कार्य की सराहना करने के लिए आए, उन्होंने कहा कि तुम्हारी समझ बहुत अच्छी है जो ऐसा काम कर रहे हो। **ईश्वरचंद्र** ने कहा– यह मेरी समझ नहीं है। यह तो बचपन में माँ द्वारा दी गई शिक्षा का फल है।

अमेरिका के सोलहवें राष्ट्रपति **अब्राहम लिंकन** बहुत ही निर्धन परिवार में पैदा हुए थे। पिता के न होने पर माँ ने ही लिंकन को पढ़ाया था। राष्ट्रपति बनने पर लिंकन ने कहा था– Whatever I and what ever I hope to be owe to my angel mother.

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी को धार्मिक संस्कार अपनी माता से ही मिले थे। कई महापुरुषों को तो माँ के गर्भ में ही महत्वपूर्ण शिक्षा मिल गई थी। जैसे– वीर अभिमन्यु ने माता के गर्भ से ही चक्रव्यूह तोड़ने की विद्या सीख ली थी। माता कुन्ती के गर्भ से **धर्मराज युधिष्ठिर** ने सत्य का पाठ सीख लिया था। शुकदेव मुनि ने सारा ज्ञान माता के गर्भ में ही प्राप्त कर लिया था। इसी प्रकार अष्टावक्र जी ने भी सारा ज्ञान गर्भ में ही प्राप्त कर लिया था। माता कौशल्या ने पुत्र राम को मर्यादा पुरुषोत्तम बना दिया। तात्पर्य यह कि बालकों को माँ के द्वारा अच्छे संस्कार प्राप्त होते हैं और अच्छे संस्कार प्राप्त होने पर ही बालक अपने जीवन में आदर्श नागरिक बनते हैं।

उक्त उदाहरणों से शिक्षा मिलती है कि बच्चों को डॉक्टर, इंजीनियर बनाने की अपेक्षा उनको एक श्रेष्ठ मनुष्य बनाने के संस्कार और शिक्षा देना ही माता–पिता का प्रथम कर्तव्य होता है।

बच्चों को आदर्श नागरिक बनाने के लिए माता-पिता के लिए कुछ सुझाव

अच्छे संस्कारों के संबंध में बेटा या बेटी की सोच न रखें। दोनों के साथ समानता का व्यवहार करें। स्वावलम्बन की शिक्षा के लिए दोनों से **घरेलू कार्यों में सहायता लें।** शारीरिक श्रम करने के लिए रूचि लेने की समझायश देना चाहिए जिससे उनको अपने भावी जीवन में मदद मिलेगी। बच्चों (बेटे– बेटी) की परवरिश, देखभाल, शिक्षा, संस्कार आदि में समानता करना चाहिए। शिक्षा के संबंध में बच्चों की रूचि (Interest) को नजर अंदाज नहीं करना चाहिए। बच्चों की प्रत्येक मांग पूरी न करें उचित अनुचित का ध्यान रखें। पॉकिटमनी अवश्य दें पर उसका दुरूपयोग न हो यह भी ध्यान रखें। अनुशासन की शिक्षा देना भी आवश्यक है। स्वास्थ्य अच्छा बनाने के लिए प्रात: जागरण, समय का सदुपयोग, खान–पान (भोजन) पर भी ध्यान देना आवश्यक है। टीवी, मोबाइल, लेपटाप आदि का उपयोग सीमित हो। अच्छे कार्यों की प्रशंसा करें। कुसंग से बचने की सलाह दें। नैतिकता के संस्कार डालें। सादा जीवन जीना, आवश्यकताएं कम रखने के लिए कहें। शिष्टाचार, अभिवादन प्रणाम, नमस्कार, चरण स्पर्श, बुजुर्गों की सेवा, अतिथि सत्कार, संबंधी बातों की शिक्षा और संस्कार भी देना चाहिए।

अच्छी और बुरी आदतों के विषय में भी बतलाना आवश्यक है। बच्चों की निराशा तनाव दूर करें। उनको अपमानित या प्रताड़ित न करें। बच्चों के सहयोगी बनें। दूसरों के सामने शिकायत न करें। माता–पिता में यदि किसी विषय पर मतभेद भी हो तो बच्चों के सामने प्रकट न करें। माता–पिता के आपसी तनाव का बच्चों पर बुरा प्रभाव पड़ सकता है। घर में एक अच्छा पुस्तकालय हो और परिवार के सभी लोग पढ़ने की आदत बनाएं।

परिवार में बच्चे अपनी उपलब्धियों अच्छे कार्यों की प्रशंसा सुनकर न केवल खुश होते हैं बल्कि वे भविष्य में और अधिक उत्साहित होकर अपने कार्य में पूरी क्षमता से लग जाते हैं। कहा गया है कि सच्ची तारीफ प्रशंसा करना सबसे बड़े उपहारों में से एक है। माता–पिता को चाहिए कि वे अपने बच्चों के अच्छे कार्यों की दिल खोलकर प्रशंसा करना न भूलें। उनको पुरस्कृत भी करें। आपकी सराहना के दो शब्दों से किसी को प्रसन्नता आनंद मिलता है तोइससे अच्छा और क्या है? परिवार का वातावरण सुखद भी बनता है। यह स्मरण रखिए कि प्रत्येक व्यक्ति (बालक–युवक–वृद्ध) प्रशंसा और सम्मान का भूखा होता है। कहा गया है कि–

'तारीफ प्रशंसा भी भोजन की तरह हमारी आवश्यकता है।'अज्ञात।

'The only way to live happily is to overlook their faults and admire their virtues the best way to make children good is to make then happy-'

– अज्ञात

बच्चों को सीमा से अधिक लाड़ प्रेम देने में उनके बिगड़ने की संभावना भी रहती है। इस संबंध में नीति सम्राट चाणक्य का यह श्लोक स्मरणीय है– **'लालायेत् पञ्चवर्षाणि दशवर्षाणि ताडयत ।**
प्राप्ते तु षोडशे वर्षे पुत्रं मित्रवदाचरेत ।।'

अर्थात् पांच वर्ष तक भरपूर पुत्र को प्यार करें, दस वर्ष तक कठोर अनुशासन में रखें। अनुशासन का पालन करने के संस्कार देना चाहिए क्योंकि इस उम्र में दिए गए संस्कार ही उसके भविष्य को बेहतर बनाने में सहायक होंगे। सोलह वर्ष से अधिक होने पर उसके साथ मित्र के समान ही व्यवहार करना चाहिए। वयस्क होने पर बालक को डांट–डपटना अच्छा नहीं होगा।

बुज़ुर्गों को सम्मान देने का संस्कार

मनुस्मृति के अनुसार– अभिवादन शीलस्य नित्यं वृद्धोपसोविनः।

अर्थात् जो नित्य अपने माता–पिता गुरू एवं वृद्धजनों का अभिवादन करता है उसकी आयु, विद्या, यश और बल में वृद्धि होती है।

विद्या ददाति विनयं के अनुसार सदैव विनम्रतापूर्वक व्यवहार करो। सदैव मधुर वाणी का प्रयोग करो।'सर्वस्य भूषणं विनयः।'

'मातृवत् परदोरसुपर द्रव्येसु लोष्टवत' (चाणक्य नीति) पर स्त्री को माता के समान और दूसरे के धन को मिट्टी की तरह देखना चाहिए।

शिष्टाचार के अनुसार गलती हो जाने पर क्षमा करें (Eucuse me) और कार्य होने पर धन्यवाद कहना न भूलें। उक्त सभी बातें अच्छे संस्कारों में शामिल है। सारांश वही है कि परिवार में माता–पिता अपने बच्चों को संस्कारवान बनाने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहें। राष्ट्रकवि श्रीकृष्ण 'सरल' की इन पंक्तियों को स्मरण रखें।

वस्त्राभूषण होते केवल तन की शोभा शुभ संस्कार, जीवन की शोभा होते हैं, जो बच्चे होते शिक्षित और संस्कारित प्रियजन, पुरजन, परिजन की शोभा होते हैं।

❖❖❖

प्राणायाम योग

देह में स्थित पंचकोश

□ : योगगुरू स्वामी रामदेव

मनुष्य की आत्मा पाँच कोशों के साथ संयुक्त है, जिन्हें पंचशरीर भी कहते हैं। ये पाँच कोश निम्नांकित हैं:

अन्नमय कोश

यह पांच भौतिक स्थूल शरीर का पहला भाग है। अन्नमय कोश त्वचा से शुक्रपर्यन्त सप्तधातुमय है जो कि पृथ्वी–तत्व से सम्बन्धित है। नियमित आहार–विहार से अन्नमय कोश पुष्ट व स्वस्थ रहता है।

प्राणमय कोश

शरीर का दूसरा भाग प्राणमय कोश है। शरीर और मन के मध्य में प्राण माध्यम है। ज्ञान–कर्म के सम्पादन का समस्त कार्य प्राण से बना प्राणमय कोश ही करता है। श्वासोच्छ्वास के रूप में भीतर–बाहर जाने–आने वाला प्राण स्थान तथा कार्य के भेद से इस प्रकार का माना जाता है। जैसे– प्राण, अपान, उदान, समान और व्यान मुख्य प्राण हैं तथा धनंजय, नाग, कूर्म, कूकल और देवदत्त गौण प्राण या उपप्राण हैं। प्राण मात्र का मुख्यकार्य है– आहार का यथावत् परिपाक करना, शरीर में रसों को समभाव से विभक्त तथा वितरित करते हुए दहेन्द्रियों का तर्पण करना, रक्त के साथ मिलकर देह में सर्वत्र घूम–घूमकर मलों का निष्कासन करना, जो कि देह के विभिन्न भागों में रक्त में आ मिलते हैं। देह के द्वारा भोगों का उपभोग करना भी इसका कार्य है। प्राणायाम के नियमित अभ्यास से प्राणमय कोश की कार्यशक्ति बढ़ती है।

मनोमय कोश

सूक्ष्म शरीर के इस पहले क्रियाप्रधान भाग को मनोमय कोश कहते हैं। मनोमय कोश के अन्तर्गत मन, बुद्धि, अहंकार और चित्त है, जिन्हें अन्तः करणचतुष्टय कहते हैं। ज्ञन एवं ध्यान से मनोमय कोश की शुद्धि एवं पुष्टि होती है। पाँच कर्मेन्द्रियाँ हैं, जिनका संबंध बाह्य जगत् के व्यवहार से अधिक रहता है।

विज्ञानमय कोश

सूक्ष्म शरीर का दूसरा भाग, जो ज्ञानप्रधान है, वह विज्ञानमय कोश कहलाता है। इसके मुख्यतत्व ज्ञनयुक्त बुद्धि एवं ज्ञानेन्द्रियाँ हैं। जो मनुष्य ज्ञानपूर्वक विज्ञानमय कोश को ठीक से जान–समझकर उचित रूप से आचार–विचार करता है और असत्य, भ्रम, मोह, आसक्ति आदि से सर्वथा अलग रहकर निरन्तर ध्यान एवं समाधि का अभ्यास करता है, उसे 'ऋतम्भरा प्रज्ञ' उपलब्ध हो जाती है, प्रज्ञावान् योगी विवेक एवं वैराग्य से चित्तवृत्तियों को निरूद्ध करके आत्मबोध को उपलब्ध हो जाता है।

आनन्दमय कोश

इस कोश को हिरण्यमय कोश, हृदयगुहा, हृदयाकाश, कारणशरीर, लिंगशरीर आदि नामों से भी पुकारा जाता है। यह हमारे हृदय–प्रदेश में स्थित होता है। हमारे आन्तरिक जगत से इसका संबंध अधिक रहता है, बाह्य जगत् से बहुत कम। मानव–जीवन, मानव के स्थूल शरीर का अस्तित्व और संसार के समस्त व्यवहार इसी पर आश्रित है। निर्बीज समाधि की प्राप्ति होने पर साधक आनन्दमय कोश में जीवनमुक्त होकर सदा आनन्दमय स्थिति में रहता है।

❖❖❖

अंतस की रसोई

पनीर कुलचे

: सुशीला घाटे

सामग्री

2 प्याला मैदा, 2 बड़ा चम्मच दही, 1/4 चम्मच बेकिंग पाउडर, एक छोटा चम्मच नमक, छोटी चम्मच चीनी, 1/2 छोटा चम्मच ब्रेड का चूरा व ईस्ट, 1 बड़ा चम्मच घी।

भरावन के लिए

तीन आलू, 100 ग्राम पनीर, 2 हरी मिर्च कटी हुई, 1 चम्मच हरा धनिया कटा हुआ, एक छोटा चम्मच नींबू का रस, 1/2 चम्मच शक्कर, तलने के लिए तेल, 1/2 छोटा चम्मच नमक स्वाद अनुसार

विधि

आधा प्याला गुनगुने पानी में ईष्ट घोल ले इसमें नमक चीनी मिलाकर 5 मिनट के लिए ढक कर रख दें।

–फिर मैदा में आटा और पानी डालकर इसे गूथ ले इसे ढक कर 3 घंटे के लिए रख दें

–भरावन के लिए आलू उबालकर छीलले और उसमें पनीर को भी मैस कर लें

–हरी मिर्च धनिया नमक चीनी व नींबू का रस अच्छी तरह मिलाकर रखें।

–मैंदा की छोटी–छोटी लोई बना ले थोड़ा सा बेलकर पनीर का मिश्रण भर दे किनारो से खींचकर मिश्रण ढक दे अब उसे गोल बेले।

–कढ़ाई में तेल गर्म करें बेला हुआ कुल्चा डालें दोनों तरफ से पलट कर भूरा होने तक सेंक ले

–फिर कड़ाई से निकाल कर रखे ऐसे सारे कुल्चे बना ले।

अब गरम–गरम तैयार कुलचे एक मुस्कुराहट के साथ सबको परोसें स्वादिष्ट कुलचे खाकर सबके चेहरे पर मुस्कान होगी।

❖❖❖

आदतों का संस्कार

बानी ऐसी बोलिए..

❑ : पी. अंजलि वर्मा

बच्चों क्या आप जानते हैं कि हम जब किसी से बात करते हैं तो हमें दो प्रकार से जवाब मिलते हैं। जवाब हमें प्यार से मिलेगा या कठोरता से। ये दो प्रकार से हम अपनी बात रखते हैं। जब हम सकारात्मक भाव में होते हैं तो हमारी बातचीत सबसे प्यार से होती है और अगर हम नाराज होते हैं तो क्रोध में होते हैं तो हमारी बातचीत कठोरता से होती है। बच्चे कठोर जवाब सुनकर डर जाते हैं परंतु विनम्रता और प्यार से वे आकर्षित होते हैं, प्रभावित होते हैं इसलिए हम यह कह सकते हैं कि बातचीत करते समय हमारी वाणी को संयमित होना चाहिए। बोलते समय हमें शब्दों का वाणी की शांति का और भावों का ध्यान रखना चाहिए।

बच्चों कबीर दास जी एक संत हुए हैं जिसे आप सब ने स्कूल में पढ़ा ही होगा और उन्हें सब जानते ही होंगे बहुत ही प्रसिद्ध कवि हुए हैं उनकी साखियां पढ़कर ही आप बड़े हुए हैं उन्होंने अपनी एक साखी में बहुत ही सुंदर बात कही है वे कहते है–

ऐसी बानी बोलिए मन का आपा खोए।
औरन को शीतल करै आपहुं शीतल होए।।

इस साखी में कबीर कहते हैं कि हम सबको ऐसी वाणी में बातचीत करना चाहिए मतलब ऐसा बोलना चाहिए, मीठा बोलना चाहिए कि हम स्वयं ठंडक का अनुभव करें और जो दूसरो का शीतलता प्रदान करें। कबीरदास जी यह समझाना चाहते हैं कि प्रेमपूर्ण बातचीत करें। हमारी बानी में मिठास हो जो सुनने वाले को अच्छा लगे उसे शांति और शीतलता का अनुभव हो इससे आप खुद भी शांति और शीतलता अनुभव कर सकेंगे। अच्छी भाषा अच्छे शब्दों का चयन करके ही हम अपनी वाणी को संतुलित कर सकते हैं। हम को अपनी शब्दावली और व्याकरण पर विशेष ध्यान व अभ्यास में रहना चाहिए। भाषा में दक्ष बनने पर ही हम अपनी बानी को असरदार बना सकते हैं। हर बच्चे को तीन भाषाएं जरूर आनी चाहिए। मातृभाषा, राष्ट्रभाषा, और अंतर्राष्ट्रीय भाषा।

हमारा देश विविधताओं का देश है यहां असंख्य बोलियां और भाषाएं बोली जाती हैं यदि हम तीन भाषाओं पर दक्षता हासिल कर लेते हैं तो हम पूरे विश्व में कहीं भी भ्रमण कर सकते हैं, और लोगों से बातचीत करके हम सब कुछ सीख सकते हैं। बच्चों को अपने बड़ों से और अपने से छोटों से भी बातचीत करते हुए भाषा पर विशेष ध्यान रखना चाहिए। शब्दों

का चयन ऐसा होना चाहिए कि सुनने वाला आपकी बात समझ जाए और आपको आपके प्रश्नों के अथवा चाहे गए बातों के अच्छा जवाब मिल जाएं।

बच्चों भाषा का हम पर विशेष प्रभाव पड़ता है इसलिए विज्ञान, गणित, भूगोल आदि विषयों के साथ–साथ अंग्रेजी, हिंदी, संस्कृत जो भाषाएं हमें पढ़ाए जाते हैं उन पर ध्यान देकर पढ़ना चाहिए और भाषा पर विशेष ध्यान भी देना चाहिए और उनमें दक्ष बनना चाहिए।

बच्चों यह अच्छी तरह समझ लें कि आपके पास जो ज्ञान है उसकी अभिव्यक्ति आप किसी न किसी भाषा में ही करेंगे इसलिए भाषा को अपनी अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बनाईये।

''मधुर वचन है औषधि, कटुक वचन है तीर
स्त्रवन द्वार हवै संचरे, साले सकल सरीर।।''

बच्चों मीठे बोल मधुर बोल औषधि की तरह हैं जो हमारे जीवन की रक्षा करते हैं परंतु कठोर अथवा कड़वे वचन जब कानों के द्वारा भीतर पहुंचती हैं तो हृदय में भी तीर की तरह लगते हैं अर्थात हमें कष्ट देती हैं दु:ख देती हैं इसलिए हमेशा हमें मधुर वचन ही बोलने चाहिए।

❖❖❖

मत हार

❑ : बलराम शर्मा

मत हार, कर ले भरोसा फिर एक बार
पथ प्रदर्शन ही तो है सफलता का सार
मत हार कर ले भरोसा फिर एक बार।।
खड़ा हो गिरकर फिर
मत भूल जीवन का आधार।
विषम परिस्थितियों से चलकर ही,
किया है मनुष्य ने आविष्कार
मत हार कर ले भरोसा फिर एक बार।।
ना हो निराश तू,
असफलता की एक बूंद से
वाष्प बन उड़ जायेगा,
ये मेहनत की धूप ले
कर निश्चय लक्ष्य भेदने को,
तोड़कर आलस्य का द्वार
मत हार, कर ले भरोसा फिर एक बार।।
अनंत तारों के मध्य
क्या देख रहा है तू ध्रुव का सत्य
अटल, अडिग अपने पथ पर,
वो कर रहा निशा पर प्रहार
वे अग्निपथ से चलकर ही
होता है निश्चित स्वर्ण का आकार
मत हार, कर ले भरोसा फिर एक बार।।
पथ प्रदर्शन ही तो है असफलता का सार
मत हार कर ले भरोसा फिर एक बार।।

शान्ति ग्रह की सैर

: डॉ. जया नर्गिस

इस बार छुट्टियों में राजू अपने ननिहाल शिवपुर आया था। वह जीवन में पहली बार किसी गाँव को देख रहा था। शहर में ही उसका जन्म हुआ और ग्यारह वर्ष की अपनी आयु में अभी तक उसने गांव को कभी नजदीक से नहीं देखा था। शिवपुर उसे सचमुच बहुत अच्छा लग रहा था। उसने नियम बना लिया था कि जब तक यहां रहेगा, रोज सुबह सैर को खेतों की तरफ निकल जायेगा और प्राकृतिक दृश्यों का भरपूर आनन्द उठायेगा। शहर में ऐसी शुद्ध हवा कहाँ? न ही ऐसी शान्ति और सुन्दर वातावरण ही शहर में होता है।

रोज की तरह राजू आज भी सुबह मुर्गे की बाँग के साथ ही उठ गया। हाथ मुंह धोकर खेतों की ओर निकल गया। खेत की पगडंडी पर चलते– चलते उसने अपने आसपास दृष्टि दौड़ाई। राजू बहुत खुश था कि गाँव आने से उसे सुबह जल्दी उठने की अच्छी आदत पड़ गई है। अब शहर लौटकर उसे स्कूल जाने में पहले की तरह देर नहीं होगी।

राजू यही सब सोचता जा रहा था कि सामने के टीले पर उसे तेज रोशनी नजर आई। उसने अचम्भे से देखा। क्या सूरज निकल रहा है? लेकिन सूरज तो पूर्व दिशा से उगता है। टीला तो पश्चिम दिशा में है। फिर यह प्रकाश कैसा? साथ ही एक तीखी और तेज आवाज भी। सिर चकरा देने वाली आवाज। राजू ने आँख गड़ाकर देखना चाहा, मगर रोशनी चकाचौंध करने वाली थी। राजू का सिर चकराने लगा। वह खेत की मेड़ पर सिर पकड़कर बैठ गया।

अभी कुछ पल ही बीते थे कि राजू ने महसूस किया कि उसकी पीठ पर कोई हाथ फेर रहा है। उसने पलटकर देखा तो एक बारगी उसके मुंह से चीख ही निकल गई।

कौन हो तुम? वह घबराकर पूछ रहा था।

आगन्तुक दिखने में मानव जैसा ही था। बस थोड़ा–सा ही अन्तर था। उसके सिर पर भौहों के बाल सफाचट थे। आँखों का रंग गहरा हरा था जिनसे – प्रकाश की किरणें फूटती लगती थीं। उसने मुस्कराकर देखा। वह बड़े स्नेह से बोला।

डरो नहीं बच्चे। मैं तुम्हें कोई नुकसान नहीं पहुंचाऊंगा।

पर तुम हो कौन? इस पृथ्वी के वासी तो नहीं लगते। राजू ने कुछ हिम्मत बांधकर कहा।

तुम ठीक कहते हो। मैं इस पृथ्वी का वासी नहीं हूं। मैं शान्ति ग्रह का निवासी हूं।

शान्ति ग्रह? ये कौन–सा ग्रह है? मंगल, बुध, गुरु आदि ग्रह तो सुने थे पर राजू के आश्चर्य का समाधान करते हुए वह शान्ति ग्रहवासी बोला।

हाँ, शान्ति ग्रह के बारे में पृथ्वी पर कोई नहीं जानता।

लेकिन तुम यहां क्या करने आए हो और तुम्हारा नाम क्या है? क्या टीले पर जो तेज प्रकाश और ध्वनि थी, वह तुम्हारे किसी यान की थी? राजू अपनी जिज्ञासा दबा नहीं पा रहा था।

सब बताता हूं भई, थोड़ा धीरज तो रखो। मेरा नाम यूरोम है, जिसे हिन्दी में सुशान्त कहेंगे।

लेकिन तुम हिन्दी कैसे सीख गये?

राजू ने यूरोम की बात बीच में काटकर पूछा।

यूरोम ने राजू को बांह पकड़कर उठाया और बोला–

चलो, हम बाकी बातें उस यान में चलकर करेंगे जो मैं टीले पर छोड़ आया हूं। राजू सकपका कर परे हट गया। उसको घबराहट भांपते हुए यूरोम ने कहा

बेटा, डरो नहीं। मैं और मेरे ग्रह के अन्य लोग कभी किसी का नुकसान नहीं करते। अगर तुम मुझ पर भरोसा करो तो मैं तुम्हें अपने ग्रह की सैर भी कराऊंगा।

यूरोम की आंखों में न जाने कैसा जादू था कि राजू को उसका हर शब्द सत्य लगा। उसका भय भी भाग गया। यह यान में चलने को तैयार हो गया। यूरोम ने बात आगे बढ़ाई।

अरे, मैंने तुम्हारा नाम तो पूछा ही नहीं।

मेरा नाम राजू है। राजू ने अपना आत्मविश्वास पुनः पा लिया था।

तो राजू अब से हम दोनों दोस्त हुए। ठीक है? यूरोम ने कहा।

हाँ, लेकिन तुम हिन्दी कैसे जानते हो ? राजू ने अपना प्रश्न दुहराया।

दरअसल पिछले वर्ष तुम्हारी ही तरह एक और पृथ्वीवासी दोस्त बन गया था। उसी ने मुझे हिन्दी बोलना सिखाया। वह पास के गाँव में रहता है और कभी–कभी हमारे ग्रह की सैर करने मेरे यान में भी जाता है।

तुम्हारा ग्रह कैसा है यूरोम? क्या पृथ्वी से अलग लगता है। राजू ने उत्सुकता से पूछा।

बिल्कुल अलग। हमारे ग्रह में पृथ्वी की तरह अमीरी गरीबी, जात पांत या रंग और नस्ल का कोई भेदभाव नहीं होता। यहां तक कि सबकी भाषा भी एक ही है। सब आपस में मिलजुलकर प्रेम, और आदर के साथ शांतिपूर्वक रहते हैं। इसलिए उसका नाम शांति ग्रह है।

यूरोम की बातों से राजू का आश्चर्य बढ़ता जा रहा था। वे दोनों अब यान के पास आ गये थे। यूरोम ने बढ़कर यान का दरवाजा खोला और राजू को अन्दर चलने का संकेत किया। राजू ने अंदर जाकर देखा कि यान अत्याधुनिक साजो–सामान से सुसज्जित है। शायद पृथ्वी के यानों में ऐसी सुविधा अभी संभव नहीं। वह आंखें फाड़कर एक– एक उपकरण को ध्यान से देख रहा था। तभी उसके दिमाग में एक प्रश्न कौंधा। उसने यूरोम से पूछा।

तुमने यह तो बताया नहीं कि तुम पृथ्वी पर किसलिए आये हो?

पृथ्वी के बारे में जानकारियां प्राप्त करने। जिस तरह पृथ्वी से लोग दूसरे ग्रहों पर जाते हैं, जानकारियां इकट्ठी करने। यूरोम ने कहा।

क्या तुम लोग किसी दिन पृथ्वी पर आक्रमण कर दोगे? राजू ने शंका प्रकट की।

नहीं बेटा। हम तो शांति के दूत हैं। हमारी तो यही इच्छा और प्रयास है कि पृथ्वी सहित सभी ग्रहों पर शांति का वास हो। युद्ध सदा के लिए समाप्त हो जाये। मनुष्य–मनुष्य में कोई भेद न हो। वरन मनुष्य पशु, पक्षियों, पेड़–पौधों के साथ स्नेह और शांति से निवास करें। यूरोम ने समझाया।

क्या ऐसा संभव है दोस्त। राजू ने आश्चर्य और प्रसन्नता से पूछा।

क्यों नहीं। यूरोम ने आश्वस्त किया।

राजू, दरअसल मनुष्य स्वभाव से शांतिप्रिय होता है। कुछ स्वार्थी और विवशताओं के अधीन वह दूसरों को नुकसान पहुंचाने का प्रयास करता है। अगर संसार में स्वार्थ और विवशता के कारणों को ही नष्ट कर दिया जाये तो चारों तरफ सिर्फ प्रेम और शांति का ही वातावरण होगा। हम इसी कोशिश में लगे हैं और तुम्हारी पृथ्वी को शांति और सुंदर बनाने में सहयोग के लिए कभी– कभी यहां आते हैं। तुम्हारी तरह धीरे–धीरे हम और भी दोस्त बनाते जा रहे हैं। मेरे अलावा मेरे और भी साथी इस काम में लगे हैं। यूरोम से इतनी उत्साहवर्द्धक बातें सुनकर राजू खुशी से उछल पड़ा और बोला।

दोस्त ! मैं तुम्हारे सुंदर शांति ग्रह की सैर करना चाहता हूं। क्या तुम मुझे ले चलोगे?

अवश्य! यूरोम ने कहा, पहले अपने माता–पिता से आज्ञा तो ले लो। मैं कल फिर आऊंगा, इसी समय, इसी जगह। फिर हम शांति ग्रह चलेंगे, अच्छा, अब मेरे चलने का समय हो गया है। विदा लेता हूं नन्हें दोस्त। फिर मिलूंगा।

यूरोम ने गोद में उठाकर राजू को यान से नीचे उतारा और पलक झपकते ही यान रोशनी और आवाज के साथ ऊपर अंतरिक्ष की ओर उठ गया। राजू हक्का–बक्का खड़ा देख रहा था। दो ही पल बाद यान आंखों से ओझल हो गया था। शांति ग्रह की सैर की रोमांचक कल्पना राजू को अपार उत्साह से भर रही थी। वह घर लौटना चाह रहा था। सामने पर्वत की ओट में सूरज मुस्कुराकर निकल रहा था और एक नई सुबह जीवन का नया संदेश लेकर आ रही थी।

❖❖❖

घरेलू नुस्खे

कच्ची प्याज के सेवन से उच्च रक्तचाप नियंत्रित होता है और कोलेस्ट्रोल को कम करता है। यह हृदयघात से बचाता है वजन नियंत्रित करता है। कच्ची प्याज के सेवन से रक्त संचार सामान्य होता है।

अमरूद का फल गुणकारी होता है इसके साथ–साथ इसके पत्ते भी लाभदायक होते हैं। इसके कोमल पत्तों को चबाकर खाने से दांतों के कीड़े नष्ट होते हैं दांतों का दर्द ठीक होता है दांत के मसूड़े स्वस्थ होते हैं।

तुलसी और अदरक का रस निकालकर उनको मिलाकर गरम कर लें और 4–5 बूंद दिन में तीन बार छोटे बच्चों को देने पर उनको सर्दी जुखाम में राहत मिलती है; सर्दी जुकाम पर यह नुस्खा तुरंत असर करता है। ये चीजें रसोई में सहज ही उपलब्ध है और यह नुस्खा छोटे बच्चों के लिए कारगर है।

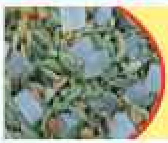

सौफ, धनिया, मिश्री, बराबर मात्रा में मिलाकर पीस लें फिर दिन में 1–1 चम्मच तीन बार लें। ऐसा करने से आधा सीसी (आधे भाग में) का दर्द माइग्रेन में बहुत लाभ होता है।

अक्सर अपच, शुष्कता अथवा गर्मी में मुंह में छाले की शिकायत हम करते हैं ऐसा होने पर यदि हम अपनी रसोई में उपलब्ध हरी धनिया पत्ती को साफ धोकर उसके कुछ पत्तों को साफ धोकर उसके कुछ पत्तों को मुंह में रखकर अच्छी तरह चलाएं और उसकी लार को मुंह में इकट्ठा कर थोड़ी देर मुंह में इकट्ठा रखें फिर बाहर निकाल दे यह क्रिया तीन से पांच बार करने से मुंह के छाले बिल्कुल ठीक हो जाते हैं यह एक सहज उपाय है।

बाल झड़ना और सफेद होना समय से पहले आम शिकायती है इनसे छूटकारा पाने के लिए उपयोगी घरेलू उपाय हैं आंवला। आंवला एक औषधि फल है इसके नियमित प्रयोग से हम सदैव स्वस्थ रह सकते हैं। आंवला का चूर्ण पानी में भिगोकर उसका लेप बालों में लगाकर 15–20 मिनट तक रखें और बाद में साफ धो लें। इसके नियमित प्रयोग से बालो का झड़ना, सफेद होना लगभग बंद होगा। आंवले का सेवन करने पर चेहरे पर कांती और बालों का जड़ से काला रंग बना रहता है।

हास-परिहास

मोहन– तुम्हारी आंख क्यों सूजी हुई है?
बंटी– कल मैं अपनी पत्नी के जन्मदिन पर केक लेकर गया था।
मोहन– लेकिन इसका आंख सूजने से क्या? संबंध है।
बंटी– मेरी पत्नी का नाम तपस्या है लेकिन केक पर दुकानदार ने हैप्पी बर्थडे 'समस्या' लिख दिया!!!....।

ये तो अच्छा हुआ कि 1947 में व्हाट्सएप नहीं था....
वरना आजादी के लिए कोई जंग में उतरता ही नहीं....
लोग घर बैठे बैठे ही कहते कि.... इस मैसेज को इतना फैलाओं कि अंग्रेज खुद भारत छोड़कर भाग जाएं....।

हिंदी की कक्षा में
मास्टर– कविता और निबंध में अंतर बताओ–
पंकज– गर्लफ्रेंड के मुंह से निकला एक शब्द भी कविता के समान होता है और पत्नी के मुंह से निकला एक शब्द भी निबंध के समान लगता है।

मम्मी– तुम बाल क्यों नहीं कटवाते?
बेटा– ओह, मम्मी इट्स फैशन
मम्मी– नालायक तेरी बड़ी बहन को देखने आए थे तो तुझे पसंद करके चले गए।

जज– तुमने पुलिस ऑफिसर की जेब में माचिस की जलती हुई तीली क्यों रखी?
पप्पू– उसने ही कहा था जमानत करवानी है तो पहले जब गर्म करो।

पत्नी– तुमने कभी मुझे सोना, हीरा या मोती गिफ्ट नहीं दिया।
पति– एक मुट्ठी–मिट्टी उठाकर पत्नी के हाथ में दिया
पत्नी– यह क्या है?
पति– मेरे देश की मिट्टी सोना उगले–उगले हीरे मोती मेरे देश की मिट्टी
पत्नी– एक थप्पड़ जड़ दिया और कहा यह देश है वीर जवानों का अलबेलो का मस्तानों का

जज– तुम्हारा जुर्म साबित हो चुका है कल तुम्हें फांसी पर चढ़ाया जाएगा।
बनिया– वो तो ठीक है.... लेकिन उतारा कब जाएगा... दुकान भी तो खोलनी है।

छात्र, सर राष्ट्रगान और राष्ट्र पशु दोनों एक साथ आए तो खड़ा रहना कि भागना है!!!!
सर– ने इस्तीफा दे दिया।

एक मतदाता इ.वी.एम के सामने बड़ी देर तक बिना वोटिंग किया खड़ा था
पोलिंग ऑफिसर ने पूछा–भाई क्या सोच रहे हो?
मतदाता– रात को किसने पीलायी वो याद नहीं आ रहा!!!.

चौधरी साहब ने नई कार खरीदी और कार के पीछे लिखवाया– सावन को आने दो
पीछे एक ट्रक ने ठोक दिया....
ट्रक के पीछे लिखा था..... आया सावन झूम के।

❖❖❖

''युवा पीढ़ी में नैतिक मूल्यों का विकास''
एक सार्थक प्रयास''

''कल्पवृक्षम वेलफेयर सोसायटी'' के द्वारा एक आयोजन उपरोक्त विषय पर युवा पीढ़ी के बीच रखा गया विविध समूहों पर यह विषय रखा गया पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तातरित संस्कृति व मूल्यों के हस्तांतरण की गति बहुत धीमी और लगभग रूक गई है ऐसा युवा अनुभव करते है। यह पीढ़ी सकारात्मक वातावरण के साथ सही मार्गदर्शन चाहती है। वे नैतिक मूल्यों व संस्कारों को चरित्र निर्माण के लिए आवश्यक मानते हैं। युवा ज्ञान वर्धक विकास को सच्चा विकास मानते हैं।

युवा एकल परिवार व परिवारों के विघटन और शिक्षण संस्थानों में अनुशासन व संस्करों के अभाव को नैतिक मूल्यों के गिरते स्तरका मूल कारण मानते हैं।

CHECK YOURPREMIUM.com
Discover
the perfect
Car Insurance
Get free quotes
Say "Hi" on 79997 36630
Check Your Premium Insurance Web Aggregator Pvt. Ltd. | ARN/BN /2023/108

HESITATE
TO START A
BUSINESS?
lookUPp
Be Business Ready
LET'S START
We will bring your business idea to life from market research to financial projections, we are here to guide you at every step
Call us at
88391 33304
Visit our website
www.lookupp.in